प्रभु दर्शन की विधि

परम तारक देवाधिदेव अरिहंत परमात्मा का हम सब पर अनहद उपकार है। उस उपकार को स्मरण करके, संसार से मुक्त होकर अरिहंत परमात्मा के समान बनने के लिए और उनके समान गुणों की प्राप्ति के लिए प्रतिदिन प्रातःकाल प्रभु के दर्शन करना आवश्यक है। भगवान के दर्शन के पूर्व मुख में अनाज का दाना या पानी की बूँद भी नहीं डालनी चाहिए।

शुद्ध वस्त्र पहनकर धूप–दीपक–अक्षत–नैवेद्य–फल आदि सामग्री लेकर दर्शन करने जाना चाहिए। जिनालय के मुख्य द्वार में प्रवेश करते समय संसार संबंधी समस्त पाप–व्यापारों का त्याग करने के रूप में प्रथम 'निसीहि' बोलकर प्रभु का पावन मुख देखते ही दोनों हाथों को जोड़कर, मस्तक झुकाकर 'नमो जिणाणं' कहना चाहिए।

इसके बाद दोहे आदि कहते हुए, प्रभु के दाहिने (अपनी बाई) ओर से तीन प्रदक्षिणा देनी चाहिए।

इसके बाद जिनालय संबंधी विचारों का त्याग करने के रूप में दूसरी 'निसीहि' कहकर प्रभु के सम्मुख दोनों हाथ जोड़कर भावपूर्वक स्तुतियाँ कहनी चाहिए। तत्पश्चात् धूप–दीप–अक्षत–नैवेद्य–फल पूजा करके तीसरी 'निसीहि' कहकर चैत्यवंदन करना चाहिए।

प्रदक्षिणा के दोहे

काल अनादि–अनंत थी, भवभ्रमण नो नहीं पार
ते भ्रमण निवारवा, प्रदक्षिणा दऊं त्रण वार... ।।१।।

भमतीमां भमतां थकां, भव भावठ दूर पलाय
दर्शन–ज्ञान–चारित्र रूप, प्रदक्षिणा त्रण देवाय... ।।२।।

दर्शन–ज्ञान–चारित्र अे, रत्नत्रयी निरधार
त्रण प्रदक्षिणा ते कारणे, भवदुःख भंजनहार... ।।३।।

स्तुतियाँ

दर्शनं देव–देवस्य, दर्शनं पाप–नाशनम्,
दर्शनं स्वर्ग सोपानं, दर्शनं मोक्ष साधनम् ।।१।।

Scanned with CamScanner

दयासिन्धु! दयासिन्धु! दया करजे, दया करजे,
मने आ जंजीरोंमांथी, हवे जल्दी छूटो करजे,
नथी आ ताप सहेवातो, भभूकी कर्मनी ज्वाला,
वरसावी प्रेमनी धारा, हृदयनी आग बुझवजे... ।।२।।

जेना गुणोना सिंधुना, बे बिंदु पण जाणुं नहीं,
पण एक श्रद्धा दिलमहि के, नाथ सम को छे नहीं;
जेना सहारे क्रोड तरिया, मुक्ति मुज निश्चय सहि
एवा प्रभु अरिहंतने, पंचांग भावे हुं नमुं... ।।३।।

छे प्रतिमा मनोहारिणी, दुःखहरी, श्री शांति जिणंद नी
भक्तोने छे सर्वदा सुखकरी, जाणे खिली चाँदनी
आ प्रतिमाना गुण-भाव धरी ने, जे माणसो गाय छे
पामी सघला सुख ते जगतना, मुक्ति भणी जाय छे ।।४।।

अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम,
तस्मात् कारुण्य भावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर ।।५।।

आव्यो शरणे तुमारा, जिनवर करजो, आश पूरी अमारी
नाव्यो भवपार मारो, तुम विण जगमां, सार ले कोण मारी?
गायो जिनराज आजे, हरख अधिक थी, परम आनंदकारी
पायो तुम दर्श नाशे भव-भय-भ्रमणा नाथ सर्वे अमारी ।।६।।

भवोभव तुम चरणोंनी सेवा, हुँ तो मांगुं छुं देवाधिदेवा
सामुं जुओ ने सेवक जाणी, एवी उदयरत्ननी वाणी ।।७।।

जिने भक्ति र्जिने भक्ति, र्जिने भक्ति र्दिने दिने
सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु, सदा मेऽस्तु भवे भवे... ।।८।।

उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः;
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे. ।।९।।

सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणं;
प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनं. ।।१०।।

Scanned with CamScanner

ज्ञान के पांच खमासमण के दोहे

समकित श्रद्धावंतने, उपन्यो ज्ञानप्रकाश;
प्रणमुं पदकज तेहना, भाव धरी उल्लास... ।।१।।

पवयण श्रुत सिद्धांत ते, आगम समय वखाण;
पूजो बहुविध रागथी, चरण कमल चित्त आण... ।।२।।

उपन्यो अवधिज्ञाननो, गुण जेहने अविकार;
वंदना तेहने माहरी, श्वासमांहे सो वार... ।।३।।

ए गुण जेहने उपन्यो, सर्व विरति गुण ठाण,
प्रणमुं हितथी तेहना, चरण कमल चित्त आण... ।।४।।

केवल दंसण नाणनो, चिदानंद घन तेज;
ज्ञान-पंचमी दिन पूजीओ, विजय-लक्ष्मी शुभहेज... ।।५।।

Scanned with CamScanner

गुरुवंदन की विधि

भगवान के दर्शन करने के उपरांत, उपाश्रय में जाकर गुरु भगवंत को वंदन करना चाहिए। यदि गुरु भगवंत प्रत्यक्ष न विराजते हों तो उनके फोटो या स्थापनाचार्यजी को वंदन करें।

सर्वप्रथम 'इच्छामि खमासमणा' सूत्र बोलते हुए दो खमासमणा देवें।

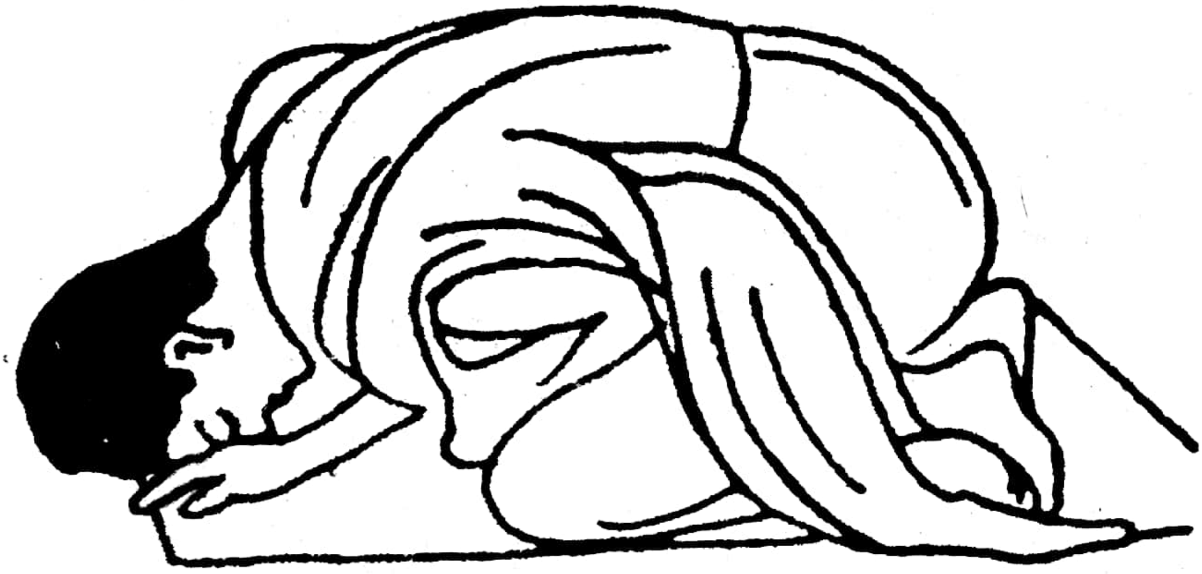

अब्भिुट्ठिओ खामने की मुद्रा

इसके बाद खड़े रहकर दोनों हाथ जोड़कर 'इच्छकार' सूत्र कहें। (यदि पदवी धारी गुरुभगवंत विराजते हों तो पुन: एक खमासमणा देवें।

तत्पश्चात् खड़े होकर, दोनों हाथ जोड़कर 'इच्छा० संदि० भगवन्! अब्भुट्ठिओ मि अब्भिंतर राईअं (देवसिअं) खामेउँ?' थोड़ा रुककर 'इच्छं, खामेमि राईअं (देवसियं)' कहकर चित्र में दर्शाए अनुसार दाहिने हाथ की हथेली चरवला (न हो तो भूमि) पर स्थापित कर मुहपत्ति (न हो तो बायाँ हाथ) मुँह के पास रखकर 'जंकिंचि अपत्तिअं.........मिच्छा मि दुक्कडं.' तक सूत्र कहें।

अब खड़े होकर एक खमासमणा देवें।

यदि पच्चक्खाण लेना हो तो 'इच्छकारी भगवन्! पसायकरी पच्चक्खाण का आदेश देशोजी' बोलकर दोनों हाथ जोड़कर पच्चक्खाण लेवें। पुन: खमासमणा देवें।

यदि सूत्र की गाथा आदि लेनी हो, सुनानी हो या वाचना-व्याख्यानादि श्रवण करना हो तो वंदन करने के पश्चात् (निम्नलिखित) तीन आदेश की प्रार्थना करनी चाहिए।

Scanned with CamScanner

खमासमणा देकर (१) इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! वायणा संदिसाहुं?...... इच्छं, पुन: खमासमणा देकर (२) इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! वायणा लेशुं? ..... इच्छं, अब तीसरा खमासमणा देकर (३) इच्छकारी भगवन्! पसाय करी वायणा प्रसाद करशोजी।

व्याख्यान आदि में मंगलाचरण सुनने के पश्चात् सकल संघ को हाथ जोड़कर ''नमो तित्थस्स'' बोल के बैठना चाहिए। मार्ग में भी जब-जब गुरु महाराज दिखाई देवें, तब-तब दोनों हाथ जोड़कर-मस्तक झुकाकर 'मत्थएण वंदामि' अवश्य ही बोलना चाहिए।

Scanned with CamScanner

आरती

जय जय आरती आदि जिणंदा, नाभिराया मरुदेवी को नंदा

पहेली आरती पूजा कीजे, नरभव पामी ने ल्हावो लीजे... जय जय ।।१।।

दूसरी आरती दीनदयाला, धुलेवा मंडपमां जग अजुवाळा... जय जय ।।२।।

तीसरी आरती त्रिभुवन देवा, सुर नर इन्द्र करें तोरी सेवा... जय जय ।।३।।

चोथी आरती चउगति चूरे, मनवांछित फल शिवसुख पूरे... जय जय ।।४।।

पंचमी आरती पुण्य उपाया, मूलचंदे ऋषभ गुण गाया... जय जय ।।५।।

मंगल दीपक

दीवो रे दीवो प्रभु मंगलिक दीवो,
आरती ऊतारण बहु चिरंजीवो... दीवो रे... ।।१।।

सोहामणुं घेर पर्व दीवाली,
अंबर खेले अमराबाली... दीवो रे... ।।२।।

दीपाल भणे एणे कुल अजुवाली,
भावे भगते विघन निवारी... दीवो रे... ।।३।।

दीपाल भणे एणे ए कलिकाले,
आरती उतारी राजा कुमारपाले... दीवो रे... ।।४।।

अम घेर मंगलिक तुम घेर मंगलिक,
मंगलिक चतुर्विध संघने होजो... दीवो रे... ।।५।।

Scanned with CamScanner

सामायिक लेने की विधि

उपकरण : धोती, खेश, चरवला, आसन, मुँहपत्ति, स्थापनाचार्यजी, स्वाध्याय आदि के लिए पुस्तकें, नवकारवाली आदि।

नोट : सामायिक – प्रतिक्रमण की क्रिया में आसन के बिना चल सकता है, क्योंकि पैरों को आधा मोड़कर, उकड़ूँ बैठकर या खड़े–खड़े भी कायोत्सर्ग– स्वाध्यायादि आराधना अच्छी तरह से की जा सकती है। लेकिन चरवले के बिना तो नहीं चल सकता है, इसके बिना शरीर को पूंजने–प्रमार्जन करने का काम कैसे होगा?

विधि : यदि स्थापनाचार्यजी न हों तो सबसे पहले नवकार और पंचिंदिय सूत्र से स्थापनाजी स्थापित करें। (देखें पृष्ठ क्र.४ चित्र क्र.१)

तत्पश्चात् खमासमणा देकर इरियावहिया, तस्स उत्तरी और अन्नत्थ सूत्र बोलकर चंदेसु निम्मलयरा तक एक लोगस्स (न आता हो तो चार नवकार) का कायोत्सर्ग करें।

इसके बाद 'नमो अरिहंताणं' का उच्चारण करके कायोत्सर्ग पूर्ण करें, और प्रगट लोगस्स सूत्र कहें।

तत्पश्चात् एक खमासमणा देकर ' इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक मुहपत्ति पड़िलेहुं? (गुरु कहेंगे– पड़िलेह) इच्छं कहकर ५० बोलों से मुहपत्ति का पड़िलेहन करें। (विधि तथा चित्र के लिए देखें पृष्ठ क्र.५९)

Scanned with CamScanner

इसके पश्चात् क्रमश: दो खमासमणा देकर नीचे लिखे अनुसार दो आदेश लेवें।

१. इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक संदिसाहुं? (गुरु कहेंगे–संदिसावेह) इच्छं

२. इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक ठाऊं? (गुरु कहेंगे–ठाएह) इच्छं..... कहकर खड़े–खड़े ही दोनों हाथ जोड़कर एक नवकार गिनकर ''इच्छकारी भगवन्! पसायकरी सामायिक दण्डक उच्चरावोजी '' कहें।

इस समय गुरु महाराज, न हों तो पूर्व में सामायिक लेकर बैठे हुए श्रावक करेमि भंते सूत्र का उच्चारण करेंगे। यदि कोई न हों तो स्वयं ही इस सूत्र का उच्चारण करें। इस समय दोनों हाथ जुड़े होने चाहिए।

तत्पश्चात् नीचे लिखे चार आदेश, खमासमण देने पूर्वक क्रमश: लेवें –

१. इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बेसणे संदिसाहुं? (गुरु कहेंगे–संदिसावेह) इच्छं,
२. इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बेसणे ठाऊं? (गुरु कहेंगे–ठाएह) इच्छं,
३. इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय संदिसाहुं? (गुरु कहेंगे–संदिसावेह) इच्छं,
४. इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय करूं? (गुरु कहेंगे–करेह) इच्छं...,

इसके बाद दोनों हाथ जोड़कर तीन नवकार गिनें, और अब ४८ मिनट तक स्वाध्याय–जप आदि करें।

नोट :

(१) ४८ मिनट पूर्ण होने पर सामायिक पारने के समय, यदि दूसरी सामायिक लेने की भावना हो तो, पूर्व की सामायिक को पारे बिना ही पूर्व वर्णित विधि के अनुसार दूसरी सामायिक लेवें, लेकिन अंतिम आदेश में 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय करूं?' के बदले 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय मां छुं?' कहकर तीन नवकार गिनें। इस प्रकार तीसरी सामायिक भी दूसरी सामायिक पारे बिना ली जा सकती है, लेकिन चौथी सामायिक नहीं ली जा सकती है, तीसरी सामायिक पारने के बाद ही चौथी सामायिक ली जा सकेगी।

(२) सामायिक–प्रतिक्रमण आदि में बोलने के समय मुँह के सामने मुहपत्ति अवश्य रखनी चाहिए तथा सामायिक के ३२ दोष न लगें इस बात की सावधानी रखनी चाहिए।

Scanned with CamScanner

सामायिक पारने की विधि

सामायिक लेने की भाँति ही सबसे पहले खमासमणा देकर इरियावहियं सूत्र से लेकर लोगस्स बोलने तक की सारी क्रिया करें, तत्पश्चात् खमासमणा देकर, 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! मुँहपत्ति पड़िलेहुं? (यहाँ सामायिक शब्द नहीं कहा जायेगा।) (गुरु कहेंगे पड़िलेहेह) 'इच्छं', कहकर ५० बोलों से मुँहपत्ति का पड़िलेहन करें। (विधि तथा चित्र के लिए देखें पृष्ठ क्र. ५९)

इसके पश्चात् खमासमणा देकर ''इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक पारूं?'' (गुरू कहेंगे– '**पुणरवि कायव्वं**' अर्थात् यह सामायिक पुन: करने योग्य है।) 'यथाशक्ति' कहकर एक खमासमणा देकर ''इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक पारूँ'' (गुरू कहेंगे : '**आयारो ण मोत्तव्वो**' अर्थात् यह शुभ आचार छोड़ने योग्य नहीं है।) 'तहत्ति' कहकर चरवले पर दाहिना हाथ रखकर, बाए हाथ में मुहपत्ति मुख के पास रखकर, नवकार तथा सामाइय वय जुत्तो सूत्र बोलें।

इसके बाद यदि पूर्व में स्थापना स्थापित की हो तो विसर्जन मुद्रा में नवकार गिनकर स्थापना का उत्थापन करें।(देखें पृष्ठ क्र. ४ चित्र क्र. २)

Scanned with CamScanner

अष्टप्रकारी पूजा की विधि

प्रभु दर्शन की विधि (पृष्ठ क्र. १०) के अनुसार जिनालय में निसीहि, प्रदक्षिणा करने के पश्चात् प्रभु के सम्मुख स्तुति बोलकर, भगवान की नजर न पड़े ऐसे स्थान पर आकर ''हे प्रभु! मैं आपकी आज्ञा शिरोधार्य करता हूँ।'' ऐसा सूचित करने के भाव से अपने मस्तक पर तिलक करें। पुरूषों को शिखाबद्ध ❙ तिलक शौर्य का भाव व्यक्त करने के लिए और महिलाओं को गोल आकार का ● तिलक समर्पण भाव अभिव्यक्त करने के लिए करना चाहिए।

पुरूषों द्वारा बिना सिलाई किए हुए धोती और खेश, ऐसे दो वस्त्र ही पूजा में उपयोग किए जाते हैं। मुखकोश के लिए पृथक् रूमाल का उपयोग नहीं होना चाहिए। अपने मुँह और श्वास की दुर्गन्ध से प्रभु की आशातना न हो जाए, इसके लिए खेश की किनारे को आठ परत मोड़कर, अपना मुँह और नाक दोनों ढ़ंक जावे, इस प्रकार खेश को बांधना चाहिए। इसके पश्चात् जल, केसर, चंदन, बरास आदि लेकर पृष्ठ क्र. ५० के अनुसार दोहे बोलते हुए, अष्ट प्रकारी पूजा प्रारम्भ करनी चाहिए।

सर्वप्रथम मोरपंखों से प्रभु को पूंज कर, बासी फूल आदि उचित रीति से उतार कर, थाली में रखना चाहिए। तत्पश्चात् गीले कपड़े से छबछबाते हुए, प्रभु के शरीर पर लगें हुए केसर को साफ करना चाहिए, किंतु वाळाकूंची का प्रयोग नहीं करना चाहिए। (यदि किसी कोने में केसर रह जाए तो जिस प्रकार एकासना करते समय दाँतों में कुछ भर जाता है तो जैसी सावधानी से हम सलाई का उपयोग करते हैं, वैसी सावधानी पूर्वक धीरे से, नर्म हाथों द्वारा वाळाकूंची का उपयोग करके केसर साफ करना चाहिए।) इसके बाद जल पूजा के दोहे बोलकर पंचामृत द्वारा प्रक्षाल करें, पुनः स्वच्छ जल से प्रक्षाल करें।

प्रक्षाल के बाद कोमल हाथों से शुद्ध, स्वच्छ और मुलायम तीन अंगलूछणा करके, चंदन पूजा का दोहा कहकर बरास का विलेपन करें, (इसके बाद वरख आदि लगावें।) तत्पश्चात् पृष्ठ क्र. ५१ में लिखें हुए नव अंग की पूजा के दोहे बोलते हुए प्रभु के नव अंगों का पूजन करें। ध्यान रहें कि नव अंग के अतिरिक्त किसी भी अंग की पूजा नहीं करनी चाहिए, और अपना नाखून, चंदन या प्रभु का स्पर्श न करें।

Scanned with CamScanner

अष्टमंगल के पाटे की पूजा नहीं करनी चाहिए, अपितु वे आलेख करने के होते हैं। यदि अष्टमंगल का आलेख करना न आता हो तो अष्टमंगल के पाटे पर हाथ की अंगुली के किनारों से इस प्रकार चंदन का विलेपन करना चाहिए कि हम उनकी आकृति बना रहे हों, या उस अष्ट मंगल के पट को हाथ में लेकर प्रभु के सम्मुख रख देवें। यहाँ विशेष रूप से यह ध्यान रखें कि अष्टमंगल पर चंदन का विलेपन करने के बाद उस चंदन से प्रभु की पूजा नहीं की जाती है, जबकि सिद्धचक्र भगवान की पूजा के उपरांत उस चंदन से प्रभु की पूजा की जा सकती है। अंत में यक्ष- यक्षिणी की पूजा अंगुठे से उनके कपाल या ललाट पर तिलक करके करनी चाहिए। इनकी पूजा के उपरांत उसी केसर से भगवान की पूजा नहीं हो सकती है।

केसर पूजा के पश्चात् फूल चढ़ाने के रूप में पुष्प पूजा करके क्रमानुसार धूप पूजा और दीप पूजा करें। इसके बाद अक्षत पूजा का दोहा बोलते हुए चार गति को दर्शाने वाला स्वस्तिक, दर्शन - ज्ञान - चारित्र को सूचित करने वाली तीन ढेरी और मोक्ष को इंगित करने वाली सिद्धशिला की आकृति बनानी चाहिए।

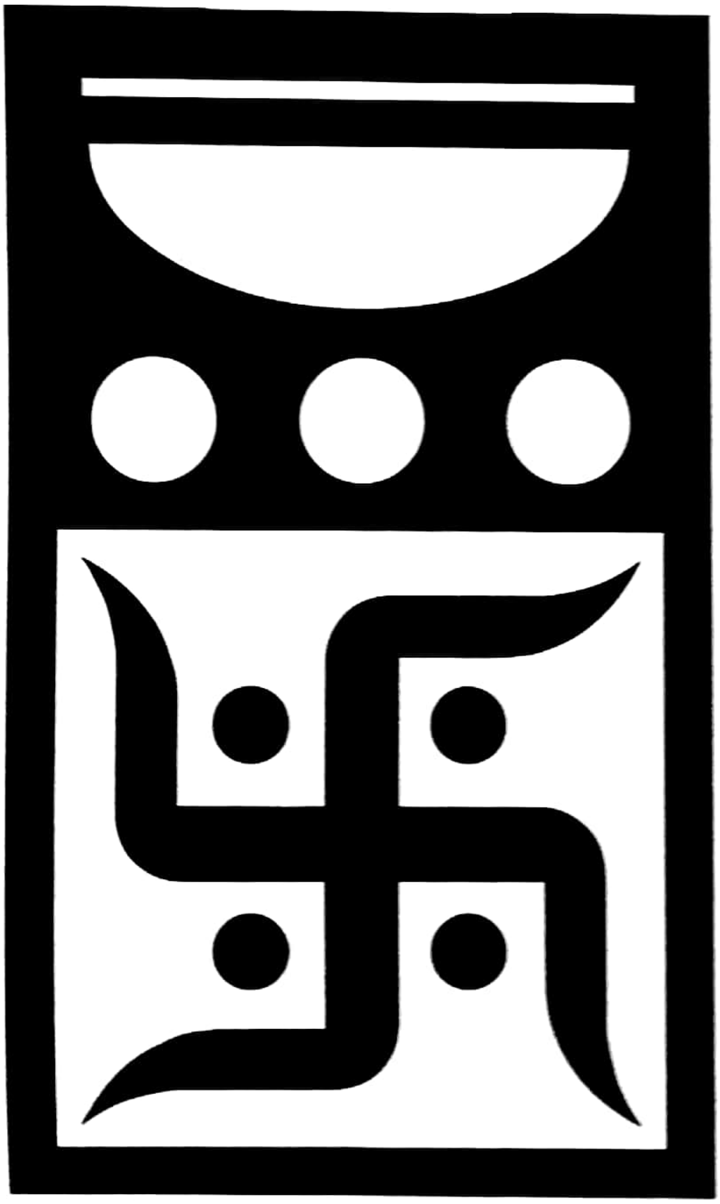

इसके बाद मिश्री, पताशा, मक्खनदाना आदि मिठाईयाँ लेकर साथिया के ऊपर रखे, और श्रीफल, बादाम, आम जैसे श्रेष्ठ फलों से फल पूजा करके फल को सिद्धशिला पर रखें।

इस प्रकार स्व-द्रव्य से अष्टप्रकारी पूजा करने के बाद द्रव्य पूजा के द्रव्यों से ध्यान हटाने के रूप में तीसरी निसीहि कहकर चैत्यवंदन रूप में भाव पूजा करें।

Scanned with CamScanner

अष्टप्रकारी पूजा के दोहे

जल पूजा : जल पूजा जुगते करो, मेल अनादि विनाश,
जल पूजा फल मुज हजो, मांगो अेम प्रभु पास।

(प्रत्येक दोहे के बाद नीचे लिखा हुआ कहना है)

ॐ ह्रीँ श्रीं परमपुरुषाय, परमेश्वराय,
जन्म–जरा–मृत्यु निवारणाय,
श्रीमते जिनेन्द्राय जलं (चंदनं, पुष्पं आदि जो भी द्रव्य (पूजा) हो)
यजामहे स्वाहा (२७ बार घण्टा बजावे।)

चंदन पूजा : शीतल गुण जेमां रह्यो, शीतल प्रभु मुख रंग,
आत्म शीतल करवा भणी, पूजो अरिहा अंग।

पुष्प पूजा : सुरभि अखण्ड कुसुम ग्रही, पूजो गत संताप,
सुम जंतु भव्य ज परे, करीअे समकित छाप।

धूप पूजा : ध्यान घटा प्रगटाविअे, वाम नयन जिन धूप,
मिच्छत्त दुर्गन्ध दूरे टले, प्रगटे आत्म स्वरूप।

दीपक पूजा : द्रव्य दीपक सुविवेकथी, करतां दुःख होय फोक,
भाव प्रदीप प्रकट हुए, भासित लोकालोक।

अक्षत पूजा : शुद्ध अखण्ड अक्षत ग्रही, नंदावर्त विशाल,
पूरी प्रभु सम्मुख रहो, टाली सकल जंजाल।

नैवेद्य पूजा : अणहारी पद में कर्या, विग्गह गईय अनंत,
दूर करी ते दीजिए, अणाहारी शिव संत।

फल पूजा : इन्द्रादिक पूजा भणी, फल लावे धरी राग,
पुरुषोत्तम पूजी करी, मांगे शिवफल – त्याग।

Scanned with CamScanner

प्रक्षाल करते समय मनमें चिंतवना चाहिए

मेरु शिखर नवरावे हो सुरपति, मेरु शिखर,
जन्म काल जिनवरजी को जाणी, पंच रूप करी आवे
हो सुरपति, मेरु शिखर नवरावे,........१

रत्न प्रमुख अड़ जातिना कलशा, औषधि चूरण मिलावे,
क्षीर समुद्र तीर्थोदक आणी, स्नात्र करी गुण गावे,
हो सुरपति, मेरु शिखर नवरावे,.......२

अेणी परे जिन प्रतिमा को न्हवण करी, बोधिबीज मन वावे,
अनुक्रमें गुण रत्नाकर फरसी, जिन उत्तम पद पावे
हो सुरपति, मेरु शिखर नवरावे,.......३

पानी से प्रक्षाल करते समय मनमें कहें

ज्ञान कलश भरी आतमा, समता रस भरपूर,
श्री जिनने नवरावता, कर्म थाये चकचूर।

चंदन पूजा करते समय मनमें बोलने के नव अंग पूजा के दोहे

(१) **अंगूठे** : जल भरी सम्पुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत,
ऋषभ चरण अंगुठडे, दायक भव जल अंत।

(२) **घुटने** : जानु बले काउस्सग रह्या, विचर्या देश-विदेश,
खड़ां खड़ां केवल लह्यु, पूजो जानु नरेश।

(३) **कलाई** : लोकान्तिक वचने करी, वरस्या वरसी-दान,
करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान।

(४) **कंधे** : मान गयुं दोय अंशथी, देखी वीर्य अनंत,
भुजा बले भव जल तर्या, पूजो खंध महंत।

(५) **शिखा** : सिद्धशिला गुण उजली, लोकांते भगवंत,
वसिया तेणे कारण भवि! शिर शिखा पूजंत।

(६) **तिलक** : तीर्थंकर पद पुण्यथी, त्रिभुवन जन सेवंत,
त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत।

Scanned with CamScanner

(७) कंठ : सोल प्रहर प्रभु देशना, कंठे विवर वर्तूल,
मधुर ध्वनि सुरनर सुणे, तिणे गले तिलक अमूल।

(८) हृदय : हृदय कमल उपशम बले, बाल्या राग ने रोष,
हिम दहे वन–खण्डने, हृदय तिलक संतोष।

(९) नाभि : रत्नत्रयी गुण उजली, सकल सुगुण विश्राम,
नाभि कमलनी पूजना, करतां अविचल धाम।

उपसंहार : उपदेशक नवतत्त्वना, तिणे नव अंग जिणंद;
पूजो बहुविध रागशुं, कहे शुभवीर मुणींद।

पुष्पपूजा करते समय (मनमें) कहें

पांच कोडीने फूलडे, पाम्या देश अढार;
राजा कुमारपाळनो, वर्त्यो जयजयकार।

धूप पूजा करते समय (मनमें) कहें

अमे धूपनी पूजा करिअे रे, ओ मनमान्या मोहनजी,
प्रभु! धूप घटा अनुसरिअे रे, ओ मनमान्या मोहनजी,
प्रभु!नहीं कोई तमारी तोले रे, ओ मनमान्या मोहनजी,
प्रभु! अंते शरण तमारुं रे, ओ मनमान्या मोहनजी।

दर्पणपूजा करते समय (मनमें) कहें

प्रभुदर्शन करवा भणी, दर्पण पूजा विशाल;
आत्मदर्पणथी जुअे, दर्शन होय तत्काल।
(दर्पण के बाद चामर के बाद पंखा, लेकिन दर्पण–पंखा साथ में नहि।)

चामर झुलाते समय (मनमें) कहें

बे बाजु चामर ढाळे, अेक आगळ वज्र उलाळे,
जई मेरु धरी उत्संगे, इन्द्र चोसठ मळिया रंगे,
प्रभु पार्श्वनुं मुखडुं जोवा, भव भवना पातिक खोवा।।

Scanned with CamScanner

पंखे से पूजा करते समय (मनमें) कहें

अग्निकोणे एक यौवना रे, रयणमय पंखो हाथ;
चलत शिबीका गावती रे, सर्व सहेली साथ. नमो नित्य नाथजी रे।

अक्षत पूजा करते समय (मनमें) कहें

अक्षत पूजा करतां थकां सफल करुं अवतार,
फल मांगुं प्रभु आगले, तार तार मुज तार।
सांसारिक फल मांगीने, रवड्यो बहु संसार,
अष्ट कर्म निवारवा, मांगुं मोक्ष फल सार।
चिहुं गति भ्रमण संसारमां, जन्म मरण जंजाल,
पंचम गति विण जीवने, सुख नहीं तिहुं काल।

अक्षत की ३ ढेरी और सिद्धशिला बनाते समय (मनमें) कहें

दर्शन ज्ञान चारित्रना, आराधनथी सार
सिद्धशिलानी उपरे, हो मुज वास श्रीकार।

चैत्यवंदन की विधि

सर्वप्रथम एक खमासमणा देकर इरियावहियं, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ कहकर चंदेसु निम्मलयरा तक एक लोगस्स का काउस्सग्ग करें, 'नमो अरिहंताणं' कहकर काउस्सग्ग पारे और प्रकट में लोगस्स कहें।

इसके बाद तीन खमासमणा देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करूं?'...... इच्छं, आदेश प्राप्त कर सकल-कुशल-वल्ली, चैत्यवंदन, जंकिंचि, नमुत्थुणं, जावंति चेइआइं सूत्र कहकर, खड़े होकर खमासमणा देकर, जावंत के वि साहू सूत्र कहने के उपरांत नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहें। तत्पश्चात् स्तवन, न आवे तो उवसग्गहरं सूत्र कहें, इसके बाद जयवीयराय सूत्र बोलें।

जयवीयराय सूत्र बोलने के बाद खड़े होकर, अरिहंत चेइयाणं, अन्नत्थ कहकर जिनमुद्रा में एक नवकार का काउस्सग्ग करें, 'नमो अरिहंताणं' कहकर काउस्सग्ग पारे और 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः' कहकर थुई बोलकर, एक खमासमणा देकर, चैत्यवंदन विधि पूर्ण करें।

(विशेष : यदि पच्चक्खाण लेना हो तो पच्चक्खाण लेने के बाद खमासमण देवें।)

Scanned with CamScanner

जावंति चेइआइं, जावंत के वि साहू तथा आभवमखण्डा तक जयवीयराय सूत्र, मुक्तासूक्ति मुद्रा में कहने चाहिए, शेष योगमुद्रा में कहने चाहिए, लेकिन खड़े होने के समय हाथ योगमुद्रा में तथा पैर जिनमुद्रा में होने चाहिए। कायोत्सर्ग करने के समय जिनमुद्रा धारण करनी चाहिए।

योगमुद्रा

(१) **योगमुद्रा** : दोनों हाथों की अंगुलियाँ एक दूसरे के अंतराल में क्रमशः प्रविष्ट हो जावें, इस प्रकार हाथों की दसों अंगुलियाँ को जोड़ कर दोनों कोहनियाँ पेट पर स्पर्श करते हुए मस्तक झुकाना, यह योगमुद्रा है।

मुक्तासुक्ति मुद्रा

(२) **मुक्तासुक्ति मुद्रा** : दसों अंगुलियों के अग्र भाग परस्पर स्पर्श करें और दोनों हथेलियों के बीच खुलापन रहे, इस प्रकार मोती के सीप जैसा आकार बनाकर हाथों को ललाट पर रखना, यह मुक्तासुक्ति मुद्रा है।

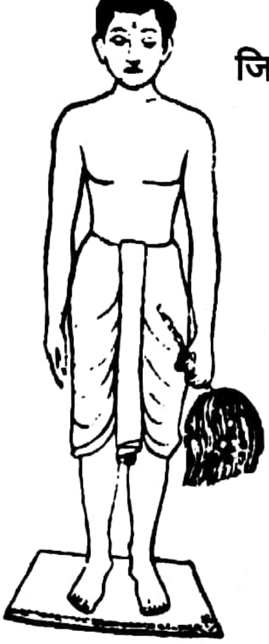

जिनमुद्रा

(३) **जिनमुद्रा** : खड़े होने पर, दोनों पैरों के बीच आगे की ओर चार अंगुली जितना और पीछे की ओर इससे कुछ कम अंतर रहे, इस प्रकार पैर रखें और हाथ के पंजे, घुटनों की ओर लटकते रहें; इस प्रकार हाथों को सीधा लटकता हुआ रखना, यह जिनमुद्रा है।

Scanned with CamScanner

चैत्यवंदन के पूर्व कहें

सकल कुशल वल्ली, पुष्करावर्त मेघो, दुरित तिमिर भानु:, कल्पवृक्षोपमान:।
भवजलनिधिपोत:, सर्वसम्पत्ति – हेतु:, स भवतु सततं व:, श्रेयसे शांतिनाथ:
श्रेयसे पार्श्वनाथ:.....१

श्री ऋषभदेव भगवान का चैत्यवंदन

आदिदेव अलवेसरुं, विनितानो राय
नाभिराया कुलमंडणो, मरुदेवा माय ... १

पाँचसे धनुषनी देहडी, प्रभुजी परम दयाल,
चोरासी लाख पूर्वनुं, जस आयु विशाल ... २

वृषभ लंछन जिन वृषधरुंअे, उत्तम गुणमणि खाण,
तस पद पद्म सेवन थकी, लहिए अविचल ठाण ... ३

श्री ऋषभदेव भगवान का स्तवन

दादा आदेश्वरजी, दादा आदेश्वरजी
दूर थी आव्यो, दादा दरिशन द्यो दादा०
कोई आवे हाथी घोड़े, कोई आवे चढ़े पलाणे,
कोई आवे पग पाले, दादाने दरबार, हाँ हाँ दादाने दरबार
दादा आदेश्वरजी ...१

शेठ आवे हाथी घोड़े, राजा आवे चढ़े पलाणे,
हुँ आवुं पग पाले, दादाने दरबार, हाँ हाँ दादाने दरबार
दादा आदेश्वरजी ...२

कोई मुके सोना रूपा, कोई मुके महोर,
कोई मुके चपटी चोखा, दादाने दरबार, हाँ हाँ दादाने दरबार
दादा आदेश्वरजी ...३

शेठ मुके सोना रूपा, राजा मुके महोर,
हूँ मुकूं चपटी चोखा, दादाने दरबार, हाँ हाँ दादाने दरबार
दादा आदेश्वरजी ...४

Scanned with CamScanner

कोई मांगे कंचन काया, कोई मांगे आँख,
कोई मांगे चरणोंनी सेवा, दादाने दरबार, हाँ हाँ दादाने दरबार
दादा आदेश्वरजी ...५

पांगलों मांगे कंचन काया, आंधळो मांगे आँख,
हूँ मांगु चरणोंनी सेवा, दादाने दरबार, हाँ हाँ दादाने दरबार
दादा आदेश्वरजी ...६

हीरविजय गुरु हिरलो ने, वीरविजय गुण गाय,
शत्रुंजयना दर्शन करतां आनंद अपार, हाँ हाँ आनंद अपार
दादा आदेश्वरजी ...७

श्री ऋषभदेव भगवान की थुई

आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया
मरुदेवी माया, धोरी लंछन पाया
जगत स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया,
केवलसिरी राया, मोक्ष नगरे सिधाया ...१

Scanned with CamScanner

मुहपत्ति पड़िलेहन की विधि

मुहपत्ति एक बीता (हाथ के अंगुठे और कनिष्का अंगुली के सिरे की दूरी) और चार अंगुल लम्बाई और चौड़ाई के माप में वर्गाकार होती है। इसके एक तरफ की किनारी धार वाली होती है। इसकी घड़ी इस प्रकार होनी चाहिए कि, इसका तह किया हुआ भाग अपने दाहिने और नीचे की ओर रहे तथा दाहिने हाथ से मुँहपत्ति की चार तहों में से अंतिम तह के ऊपर का किनारा, इस प्रकार पकड़ा जावे कि, खोलते समय धार वाली किनार आँखों के सामने ऊपर की ओर रहे, तथा बीच की खड़ी घड़ी अपनी ओर आती हुई हो, ऐसा दिखे। मुहपत्ति का पड़िलेहन करते समय दोनों पैरों से ऊपर बैठकर मुहपत्ति को चित्र क्रमांक १, पृ.६० के अनुसार खोलें

इसके बाद मुहपत्ति के उस तरफ का व्यवस्थित निरीक्षण करें। कोई जीव जंतु दिखाई देवे तो जयणापूर्वक उसकी रक्षा करें। इसके पश्चात्, दाहिने हाथ में रहे हुए किनारे से, बाँए हाथ और बाँए हाथ में रहे हुए किनारे से, दाहिने हाथ को फेरें, और पूर्व की भाँति दूसरी तरफ का भी निरीक्षण करें। (देखें चित्र क्र. २, पृ.६०)

इसके बाद बाँए हाथ की तरफ का कोना तीन बार झड़ावें, ये तीन पुरिम कहे जाते हैं। अब पूर्व की भाँति किनारा बदल कर, दूसरी ओर देखें और दाहिने तरफ का किनारा भी तीन बार झड़क कर, तीन पुरिम करें। (देखें चित्र क्र. ३-४, पृ.६०)

तत्पश्चात् दाहिने हाथ से मुहपत्ति का मध्य भाग बाँए हाथ पर रखकर तह किये हुए मध्य भाग का हथेली की ओर का किनारा इस प्रकार खींचे कि वह दो तह की घड़ी वाला बन जाए। (देखें चित्र क्र. ५, पृ.६१)

Scanned with CamScanner

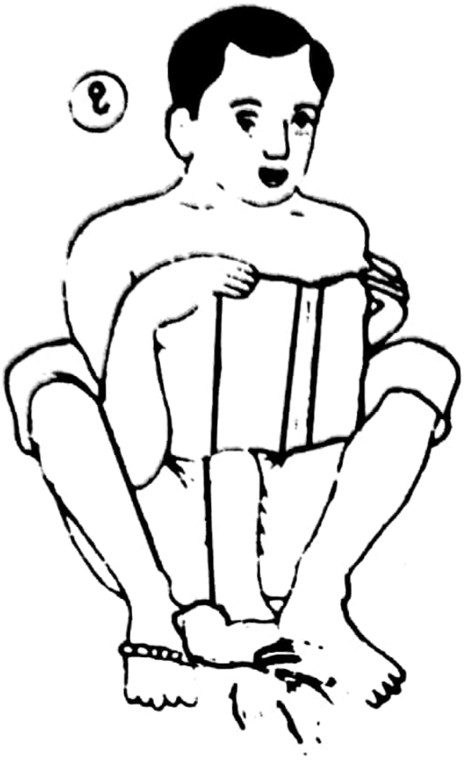

(१)

१. उकड़ू बैठना।

२. हाथ दोनों पैरों के बीच में रखें।

३. मुहपत्ति को खोलें।

४. इसके बाद मुहपत्ति का निरीक्षण करते हुए '**सूत्र**' ऐसा कहें।

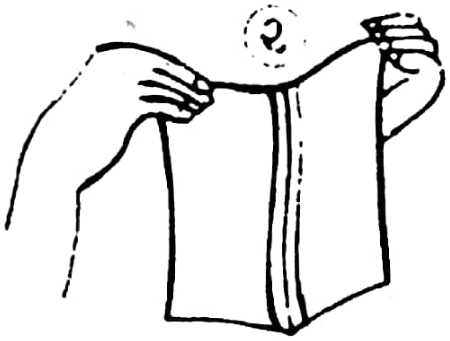

(२) मुहपत्ति को दूसरी ओर घुमाकर निरीक्षण करते हुए मन में '**अर्थ-तत्त्व करी सद्दहुं**' ऐसा कहें।

મૌલિક પાઠ્યક્રમ

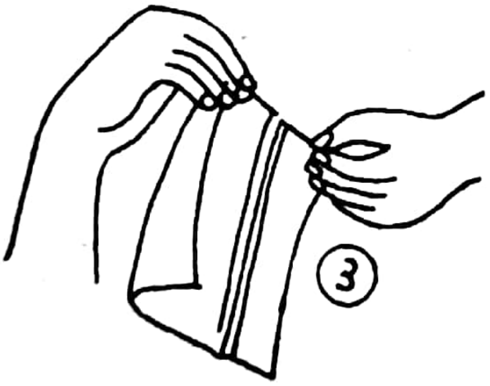

(३) मुहपत्ति के बाँए छोर को झड़कते हुए '**सम्यक्त्व मोहनीय, मिश्र मोहनीय, मिथ्यात्व मोहनीय परिहरुं**' एसा कहें।

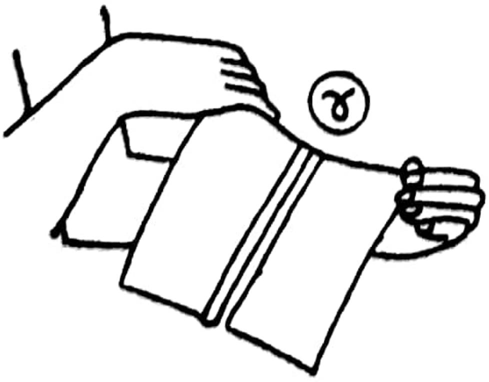

(४) दाहिने छोर को झड़कते हुए '**कामराग, स्नेहराग, दृष्टिराग परिहरुं**' कहें।

Scanned with CamScanner

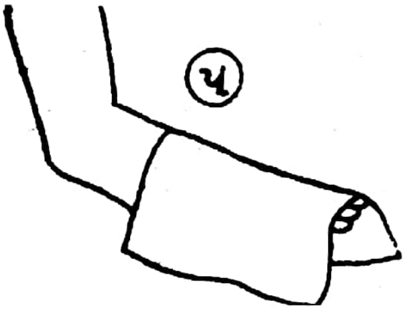

(५)

तत्पश्चात् मुहपत्ति का मध्य भाग बाँए हाथ के ऊपर इस प्रकार रखें।

आँखों के समक्ष आए हुए दो तह की मुहपत्ति के तीन मोड़ों को, दाहिने हाथ की चारों अंगुलियों के तीन अंतरों में रखकर, बाँए हाथ की हथेली से कलाई तक, हाथ को स्पर्श न करें, इस प्रकार लेकर जावें। (देखें चित्र क्र. ६) तथा कलाई से हथेली तक रगड़ते हुए तीन बार बाहर की ओर लावें।

कलाई की तरफ हाथ के स्पर्श के बिना मुहपत्ति ले जाने को अक्खोड़ा कहा जाता है, और हाथ को रगड़ते हुए तीन बार हथेली की तरफ मुहपत्ति को लाने को पक्खोड़ा कहा जाता है। इतनी विधि करने से मुहपत्ति की पड़िलेहना पूर्ण होती है। इस पूरी प्रक्रिया में मुहपत्ति पड़िलेहन के पच्चीस बोल कहने होते हैं। इसके बाद पड़िलेहना की गई मुहपत्ति से शरीर की पड़िलेहना नीचे वर्णित पच्चीस बोलों के कथन के साथ करनी होती है।

पक्खोड़ा हो जाने के बाद, दाहिने हाथ में तीन सलवट डाली गई मुहपत्ति से, बाँए हाथ के पिछले भाग को, ऊपर से कोहनी तक प्रमार्जन करें, फिर कोहनी से ऊपर तक, दाहिने तरफ के भाग की प्रमार्जना करके, ऊपर से कोहनी तक के बाँए भाग की प्रमार्जना के रूप में, बाँए हाथ की तीन प्रमार्जना करनी चाहिए।

इसके उपरांत बाँए हाथ की अंगुलियों के तीन अंतरों में मुहपत्ति के तीन सल करके बाँए हाथ के समान ही दाहिने हाथ की तीन बार प्रमार्जना करनी चाहिए।

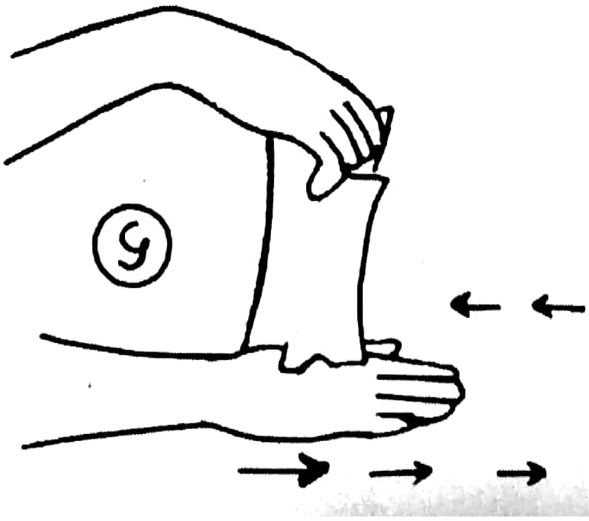

(६) मुहपत्ति की तीन सलवटों को हथेली से कलाई की ओर लाते समय क्रमशः ''**सुदेव – सुगुरु – सुधर्म; आदरुं**'' ''**ज्ञान – दर्शन – चारित्र आदरुं**''; ''**मनगुप्ति – वचनगुप्ति – कायगुप्ति आदरुं**'' कहें।

Scanned with CamScanner

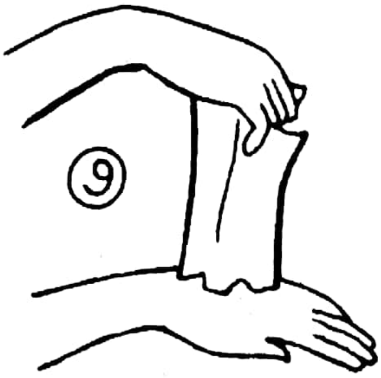

(७) कलाई से हथेली की ओर बाहर लाते समय मन में क्रमश: **'कुदेव – कुगुरु – कुधर्म परिहरुं'; 'ज्ञानविराधना – दर्शनविराधना – चारित्रविराधना परिहरुं', 'मनदण्ड – वचनदण्ड – कायदण्ड परिहरुं'** कहें।

(८) दोनों हाथों की प्रमार्जना करते समय क्रमश: **'हास्य – रति – अरति परिहरुं' 'भय – शोक – दुर्गंछा परिहरुं'** कहे।

इसके पश्चात् सलवटे हटाकर, दोनों हाथों से दोनों किनारों को पकड़ कर, मस्तक के मध्य, दाहिने और बाँए भाग की, मुख के मध्य, दाहिने और बाँए भाग की तथा हृदय के मध्य, दाहिने और बाँए भाग की प्रमार्जना करनी होती है।

मस्तक पे

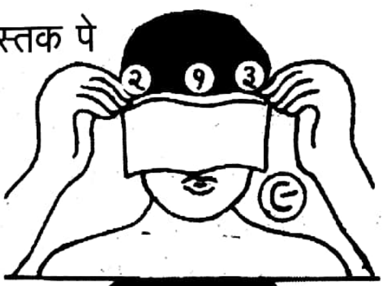

(९) मस्तक की प्रमार्जना करते समय मन में **'कृष्ण लेश्या – नील लेश्या – कापोत लेश्या परिहरुं'** कहें।

मुख पे

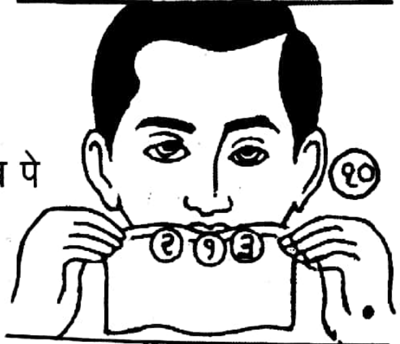

(१०) मुख की प्रमार्जना करते समय मन में **'रसगारव – ऋद्धिगारव – शातागारव परिहरुं'** कहें।

हृदय पे

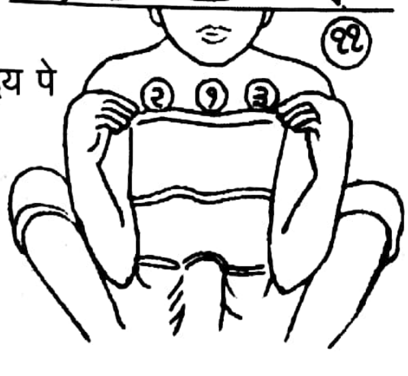

(११) हृदय की प्रमार्जना करते समय मन में **'मायाशल्य – नियाणशल्य – मिथ्यात्वशल्य परिहरुं'** कहें।

Scanned with CamScanner

(१२) दोनों कंधों की पडिलेहना करते समय मन में क्रमश: **'क्रोध – मान परिहरुं', 'माया – लोभ परिहरुं'** कहें।

(१३) दोनों पैरों की प्रमार्जना करते समय मन में क्रमश: **'पृथ्वीकाय – अप्काय– तेउकाय की जयणा करुं', 'वायुकाय – वनस्पतिकाय – त्रसकाय की रक्षा करुं'** कहें।

इसके बाद दाहिने कंधे पर दो बार और बाँए कंधे पर दो बार, इस प्रकार चार बार मुँहपत्ति से प्रमार्जन करें या तो दाहिने और बाँए कंधों के दाहिने बाँए हिस्सों में, इस प्रकार चार बार मुहपत्ति से प्रमार्जन करें।

इतना करने के बाद, चरवला या ओघा से दाहिने पैर के मध्य, दाहिने और बाँए हिस्से में और बाँए पैर के मध्य, दाहिने और बाँए हिस्से की तरफ, इस प्रकार छ: प्रमार्जन करनी होती है।

इस प्रकार पच्चीस बोलों से मुहपत्ति की और उसके बाद दूसरे पच्चीस बोलों से (पड़िलेहन की हुई मुहपत्ति से) शरीर का पड़िलेहन करना होता है, इस समय २६ से पचास तक के बोल कहने होते हैं। विशेष ध्यान रखें कि महिलाओं को चित्र क्र. ९, ११,और १२ तथा साध्वियों को चित्र क्र. ११, १२ की पड़िलेहन नहीं करनी होती है।

Scanned with CamScanner

मुँहपत्ति पड़िलेहन के बोल

पड़िलेहन क्रिया	क्या बोल बोलने हैं?	बोल
एक तरफ का निरीक्षण	सूत्र	
दूसरी तरफ का निरीक्षण	अर्थ, तत्त्व करी सद्दहुं	१
	६ पुरिम	
पहले तीन पुरिम के समय	सम्यक्त्व मोहनीय, मिश्र मोहनीय, मिथ्यात्व मोहनीय परिहरुं	२-३-४
दूसरे तीन पुरिम के समय	कामराग, स्नेहराग, दृष्टिराग परिहरुं	५-६-७
	९ अक्खोड़ा तथा ९ पक्खोड़ा	
पहले तीन अक्खोड़ा करते	सुदेव, सुगुरु, सुधर्म आदरुं	८-९-१०
पहले तीन पक्खोड़ा करते	कुदेव, कुगुरु, कुधर्म परिहरुं	११-१२-१३
दूसरे तीन अक्खाड़ा करते	ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदरुं	१४-१५-१६
दूसरे तीन पक्खोड़ा करते	ज्ञानविराधना, दर्शनविराधना, चारित्रविराधना परिहरुं	१७-१८-१९
तीसरे तीन अक्खोड़ा करते	मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति आदरुं	२०-२१-२२
तीसरे तीन पक्खोड़ा करते	मनदण्ड, वचनदण्ड, कायदण्ड परिहरुं	२३-२४-२५

इसके पश्चात् शरीर की पड़िलेहना २५ बोलों से करें

Scanned with CamScanner

शरीर की पड़िलेहन के बोल

पड़िलेहन क्रिया	क्या बोल बोलने हैं?	बोल
बाँए हाथ के तीन भाग की प्रमार्जना करते	हास्य, रति, अरति परिहरुं	२६–२७–२८
दाहिने हाथ के तीन भाग की प्रमार्जना करते	भय, शोक, दुर्गंछा परिहरुं	२९–३०–३१
मस्तक के तीन भाग की प्रमार्जना करते	कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या परिहरुं	३२–३३–३४
मुख के तीन भागों की प्रमार्जना करते	रस गारव, ऋद्धि गारव, शाता गारव परिहरुं	३५–३६–३७
हृदय के तीन भाग की प्रमार्जना करते	माया शल्य, नियाण शल्य, मिथ्यात्व शल्य परिहरुं	३८–३९–४०
दाहिने कंधे की प्रमार्जना	क्रोध, मान परिहरुं	४१–४२
बाँए कंधे की प्रमार्जना करते	माया, लोभ परिहरुं	४३–४४
दाहिने पैर के तीन तरफ चरवले से प्रमार्जना करते	पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय की जयणा करुं	४५–४६–४७
बाँए पैर के तीन तरफ चरवले से प्रमार्जना करते	वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय की रक्षा करुं	४८–४९–५०

Scanned with CamScanner

श्री पार्श्व जिन की थुई

शंखेश्वर पासजी पूजिए, नरभव नो ल्हावो लीजिए;
मनवांछित पूरण सुरतरु, जय वामासुत अलवेसरु. ...१

दोय राता जिनवर अतिभला, दोय धोला जिनवर गुण नीला;
दोय नीला दोय शामल कह्या, सोले जिन कंचनवर्ण लह्या. ...२

आगम ते जिनवर भाखियो, गणधर ते हैडे राखियो;
तेहनो रस जेणे चाखिओ, ते हुओ शिवसुख साखियो. ...३

धरणेन्द्र राय पद्मावती, प्रभु पार्श्वतणा गुण गावती;
सहु संघना संकट चूरती, **नयविमलना** वांछित पूरती. ...४

देववंदन की विधि

सर्वप्रथम एक खमासमण देकर इरियावहियं, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ सूत्र कहकर, एक लोगस्स का (चंदेसु निम्मलयरा तक) काउस्सग्ग करें। काउस्सग्ग पार कर, प्रकट लोगस्स कहें।

इसके पश्चात्, खमासमणा देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करुं? इच्छं' कहकर, बायाँ घूटना उपर करके, चैत्यवंदन मुद्रा में, ''सकल कुशल-वल्ली'' कहकर, चैत्यवंदन, जंकिंचि, नमुत्थुणं कहकर, (आभवमखंडा तक) आधा जयवीयराय कहें।

इसके पश्चात् खमासमणा देकर, 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करूं? इच्छं, 'कहकर बायाँ घूटना उपर करके, चैत्यवंदन मुद्रा में, दूसरा चैत्यवंदन, जंकिंचि, नमुत्थुणं कहें।

इसके बाद, खड़े होकर, अरिहन्त चेइआणं, अन्नत्थ कहकर, एक नवकार का कायोत्सर्ग नमो अरिहंताणं कह पारें और नमोऽर्हत्० कहकर पहली थुई कहें।

तत्पश्चात्, लोगस्स, सव्वलोए अरिहंताणं चेइआणं, अन्नत्थ कहकर एक नवकार का कायोत्सर्ग करें, पार कर दूसरी थुई कहनी है।

Scanned with CamScanner

६. इसके बाद पुक्खवर–दीवड्ढे, वंदणवत्तिआए, अन्नत्थ कहकर, एक नवकार का कायोत्सर्ग करें। कायोत्सर्ग पारने के बाद तीसरी थुई कहें।

७. अब सिद्धाणं बुद्धाणं–वेयावच्चगराणं, अन्नत्थ कहकर एक नवकार का कायोत्सर्ग करने के बाद नमोऽर्हत्० कहकर चौथी थुई कहें।

८. इसके बाद बायाँ घूटना उठाके, चैत्यवंदन मुद्रा में बैठकर, नमुत्थुणं सूत्र कहना है।

९. फिर खड़े होकर, अरिहंत चेइआणं–अन्नत्थ कहकर, एक नवकार का कायोत्सर्ग करें, पारने के पश्चात् नमोऽर्हत् कहकर, नए जोडे की पहली थुई कहें। पूर्व में वर्णित ४ से ७ तक की क्रिया, चार थुई तक, सभी करें।

१०. अब बैठकर बायाँ घूटना उपर करके, चैत्यवंदन मुद्रा में, नमुत्थुणं, जावंति चेइआइं, (खडे हो के) खमासमण, जावंत केवि साहू कहने के बाद, नमोऽर्हत्० बोलकर स्तवन कहते हैं और इसके पश्चात् आधा जय वीयराय कहेंगे।

११. अब खमासमणा देकर, 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करुं? इच्छं' ऐसा आदेश मांग कर, तीसरा चैत्यवंदन किया जायेगा। जंकिंचि, नमुत्थुणं कहकर सम्पूर्ण जयवीयराय कहेंगे। तत्पश्चात्, खमासमणा देकर, दाहिना हाथ मुट्ठि बांधकर, जमीन पर रखकर, 'अविधि आशातना मिच्छा मि दुक्कडं' कहेंगे।

Scanned with CamScanner

वांदणा देने की विधि (२५ आवश्यक)

(१) यथाजात मुद्रा : जन्म के समय या दीक्षा लेने के समय, दोनों हाथ जोड़कर, मस्तक पर लगाने के रूप में, जो नम्र मुद्रा होती है, वैसी मुद्रा वांदणा सूत्र बोलते समय होनी चाहिए।

(२-३) दो अवनत : 'इच्छामि .... निसीहिआए', कहते समय मस्तक को थोड़ा झुकावें, ऐसी मुद्रा। दो वांदणा में कुल दो अवनत होता हैं। (चित्र क्र. १, पृ. ८८)

(४-५) प्रवेश : इसके बाद निसीहि कहकर, खड़े-खड़े ही दोनों पैरों के पीछे तीन, आगे तीन और आगे की जमीन पर तीन, इस प्रकार कुल नौ बार चरवले से प्रमार्जन कर, अवग्रह में प्रवेश करके (सहज रूप से आगे आकर) गोदोहिका (गाय को दोहने के लीए ग्वाला जिस आसनमें बैठता है, उस

Scanned with CamScanner

प्रकारके) आसन में बैठें (देखें चित्र क्र. २)। दो वांदणा में इस प्रकार दो बार प्रवेश होता है। इसके बाद दोनों हाथों में दो बार चरवले से प्रमार्जन कर तथा (साधुओं द्वारा बाँए घूटन पर) श्रावक द्वारा चरवले पर तीन बार प्रर्माजन करके मुँहपत्ति रखकर, (इस प्रकार कुल १४ बार प्रमार्जन होता हैं।)

(६-१७) बार आवर्त्त तथा (१८-२१) चार शिर्षनमन

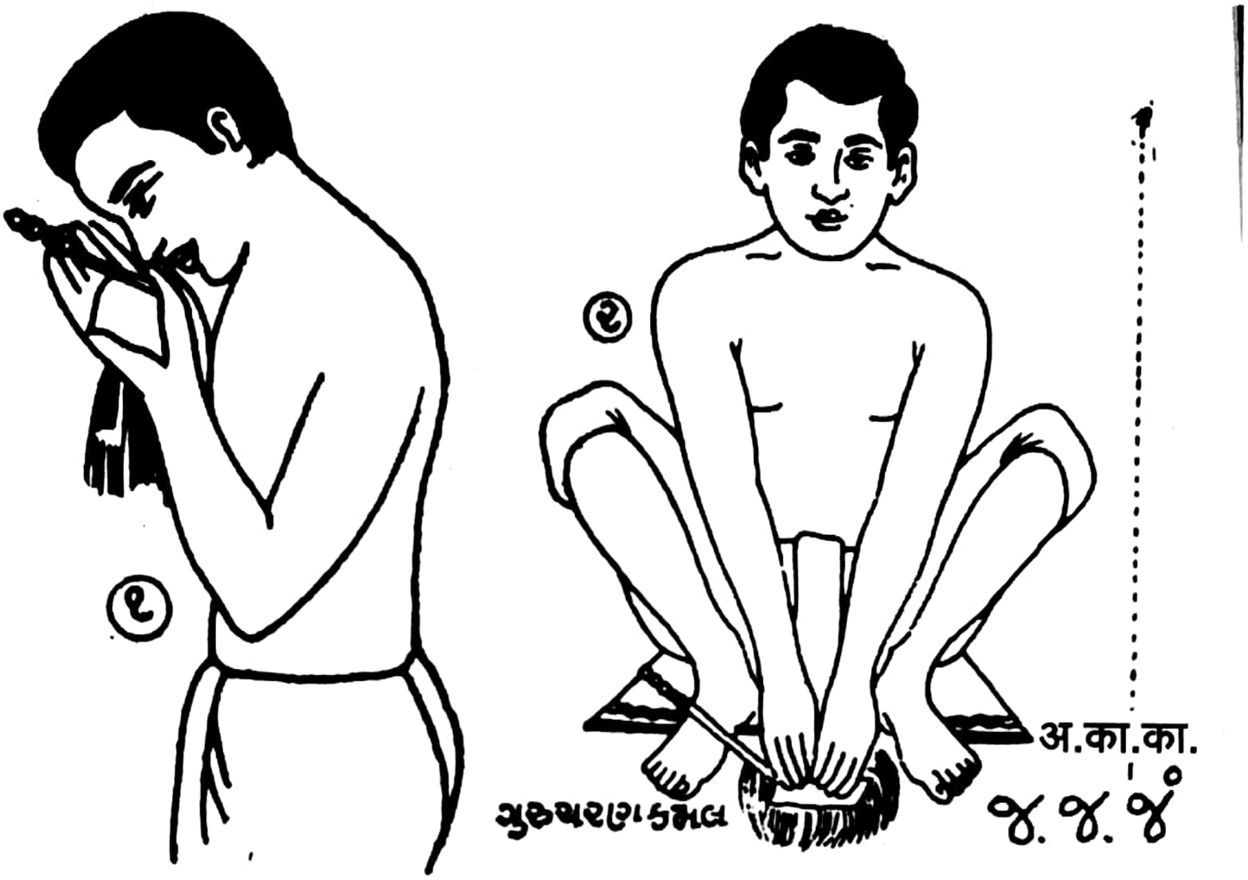

इसके पश्चात्, हाथों की दसों अंगुलियों (दोनों अंगुठों सहित) (देखे चित्र २-३)

अ	कहते हुए गुरुचरण (मुँहपत्ति/चरवले) में उलटे रूप में स्पर्श करें।	
हो	कहते हुए अपने मस्तक पर	सीधा स्पर्श करें
का	कहते हुए गुरुचरण पर	उलटा स्पर्श करें
यं	कहते हुए अपने मस्तक पर	सीधा स्पर्श करें
का	कहते हुए गुरुचरण पर	उलटा स्पर्श करें
य	कहते हुए अपने मस्तक पर	सीधा स्पर्श करें

Scanned with CamScanner

इसके बाद गुरुचरणों पर दोनों हाथ सीधा रखकर उस पर मस्तक का स्पर्श करते हुए ''संफासं'' कहते हैं। (देखें चित्र ४, पृ.९०)

③

५

यह होने के बाद 'खमणिज्जो भे... वइक्कंतो' तक कहने के बाद हाथों की अंगुलियों के दसों शीर्ष भागों के साथ (देखें चित्र क्र. २-५-३, पृ. ८८,८९)

ज	कहते समय गुरुचरणों पर	उलटा स्पर्श करें
त्ता	कहते समय मध्य भाग में	सीधा हाथ रखें
भे	कहते समय मस्तक पर	सीधा स्पर्श करें
ज	कहते समय गुरुचरणों पर	उलटा स्पर्श करें
व	कहते समय मध्य भाग में	सीधा हाथ रखें
णिज्	कहते समय मस्तक पर	सीधा स्पर्श करें
जं	कहते समय गुरुचरणों पर	उलटा स्पर्श करें
च	कहते समय मध्य भाग में	सीधा हाथ रखें
भे	कहते समय मस्तक पर	सीधा स्पर्श करें

इसके बाद गुरुचरणों में दोनों हाथों को सीधा रखकर, उस पर मस्तक स्पर्श करते हुए, खामेमि कहें (देखें चित्र ४, पृ.९०)

Scanned with CamScanner

'अहो–कायं–काय–जत्ताभे–जवणिज्–जंचभे', इस प्रकार दो वांदणा में छ: छ: आवर्त्त मिलकर, कुल बारह आवर्त्त होंगे तथा, 'संफासं' और 'खामेमि' कहते समय, मस्तक झुकाने के रूप में, दो दो शीर्ष नमन मिलकर, दो वांदणा में कुल चार शीर्ष नमन होते हैं।

(२२) निष्क्रमण : 'खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कमं' कहने के बाद, तीन प्रमार्जन (पूर्वोक्त १४ + ये ३ मिलकर, कुल १७ प्रमार्जन होंगे। खमासमणा के समय भी इन १७ प्रमार्जन् का ध्यान रखना चाहिए।) करके खडे. होवें और अवग्रह से बाहर निकलते हुए, 'आवस्सिआए' पद बोलकर, शेष वांदणा सूत्र पूर्ण करें।

दूसरी वांदणा में, 'आवस्सिआए' पद बोले बिना ही, अवग्रह से बाहर निकले बिना ही जहाँ बैठे थे वहीं खड़े होकर, 'पडिक्कमामि खमासमणाणं... वोसिरामि' तक का बाकी सूत्र पूर्ण करें। इस प्रकार निष्क्रमण (बाहर निकलना) एक ही बार होता है।

(२३-२४-२५) तीन गुप्ति : वांदणा देते समय मन की एकाग्रता के रूप में मन गुप्ति, वांदणा सूत्र के अक्षरों का अस्खलित और शुद्ध उच्चारण के रूप में वचन गुप्ति और शरीर से आवर्त्त आदि विधिपूर्वक करने द्वारा काय गुप्ति का पालन करना चाहिए।

उपरोक्तानुसार २५ आवश्यकों के पालन पूर्वक वांदणा देने से गुरु महाराज के प्रति उत्कृष्ट विनय प्रकट होता है और अनंत कर्म नष्ट होते हैं।

Scanned with CamScanner

देवसिय प्रतिक्रमण की विधि

पूर्व सूचना :

(१) सामायिक या प्रतिक्रमण में पुरुषों को शुद्ध धोती और खेस धारण करना चाहिए। सिले हुए वस्त्र नहीं पहनने चाहिए।

(२) आसन के बिना सामायिक–प्रतिक्रमण कर सकते हैं, लेकिन चरवले के बिना तो कदापि नहीं किया जा सकता हैं।

(३) सामायिक प्रतिक्रमण के पूर्व ही लघुशंका और दीर्घशंका आदि क्रियाएँ कर लेनी चाहिए। प्रतिक्रमण आदि चालु क्रिया में लघुशंका आदि के लिए नहीं जाना चाहिए, फिर भी यदि विवशता में जाना भी पड़े तो छः आवश्यक पूर्ण होने के बाद **सामायिक, चउविसत्थो, वंदन, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग तथा पच्चक्खाण कर्युं छे जी,** ऐसा कहकर जाना ठीक रहेगा। इसके साथ–साथ सबसे पहले अन्य अशुद्ध वस्त्र पहन कर, सिर पर व्यवस्थित रूप से कांबली (शाल) ओढ़कर, बाहर हरियाली रहित, शुद्ध निर्दोष स्थान पर लघुशंका करके, पुनः शुद्ध वस्त्र धारण करे तथा शाल को समेटने के बदले लगभग १० मिनट तक सूखने के लिए खुला रखकर, सूखने दे। फिर इरियावहियं, गमणागमणे करके जहाँ से प्रतिक्रमण करना शेष रहा हो, वहाँ से प्रतिक्रमण जारी करे.. सामुहिक प्रतिक्रमण यदि आगे हो गया हो तो शेष रहे हुए को करने के बाद अन्यों के साथ सम्मिलित होना चाहिए।

(४) सामायिक प्रतिक्रमण के काल में अपने पर बिजली का प्रकाश न गिरे, इस बात की सावधानी रखनी चाहिए।

१. सबसे पहले सामायिक लेवें। (पृष्ठ क्र. २६)

२. यदि चउव्विहार उपवास न हो (पक्का पानी पिया हो) तो मुहपत्ति पडिलेहन करें और यदि उपवास न हो अर्थात् भोजन किया हो तो दो वांदना देवें।

Scanned with CamScanner

३. इसके बाद 'इच्छकारी भगवन्! पसाय करी पच्चक्खाण नो आदेश देशो जी' कहकर यथाशक्ति पच्चक्खाण करें।

४. इसके बाद खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करूँ?' इच्छं कहकर चैत्यवंदन कहें।

५. तत्पश्चात् जंकिंचि, नमुत्थुणं, अरिहंत चेइआणं, अन्नत्थ० कहकर, एक नवकार का कायोत्सर्ग करें। कायोत्सर्ग पार कर, नमोऽर्हत् कहकर पहली थुई कहें।

६. लोगस्स, सव्वलोए-अरिहंत चेईआणं, अन्नत्थ० कहकर एक नवकार का कायोत्सर्ग करे, कायोत्सर्ग पार कर दूसरी थुई कहें।

७. इसके बाद पुक्खरवर-दीवड्ढे, सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं, वंदण वत्तिआए, अन्नत्थ० कहकर, एक नवकार का कायोत्सर्ग करें। कायोत्सर्ग पार कर तीसरी थुई कहें।

८. सिद्धाणं बुद्धाणं, वेयावच्चगराणं० अन्नत्थ० कहकर, एक नवकार का काउस्सग करें, कायोत्सर्ग पार कर नमोऽर्हत्० कहकर चौथी थुई कहें।

९. बैठकर योग मुद्रा में नमुत्थुणं कहें। इसके बाद

१०. एक खमासमण देकर भगवानहं, दूसरा खमासमण देकर आचार्यहं, तीसरा खमासमण देकर उपाध्यायहं, और चौथा खमासमण देकर सर्वसाधुहं कहें। फिर

११. 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिअ प्रडिक्कमणे ठाऊँ?' 'इच्छं' कहकर दाहिना हाथ (मुट्ठी) चरवला के उपर रखकर 'सव्वसवि-देवसिअ दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, मिच्छा मि दुक्कड़ं' कहें। फिर

१२. खड़े होकर करेमि भंते, इच्छामि ठामि, तस्सउत्तरी, अन्नत्थ कहकर, पंचाचार की आठ गाथा (नाणंमि सूत्र), न आता हो तो आठ नवकार का कायोत्सर्ग करें। फिर

१३. प्रगट लोगस्स कहकर, तीसरे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहन करके दो वांदणा देवें।

१४. इसके बाद 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिअं आलोऊँ? इच्छं आलोएमि, जो मे देवसिओ०' सूत्र कहें।

१५. इसके बाद सातलाख और अठारह पाप स्थानक का पाठ कहें।

१६. फिर 'सव्वसवि-देवसिअ दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कड़ं' कहें।

Scanned with CamScanner

१७. अब बैठकर दाहिना पैर खडा करके, एक नवकार, करेमि भंते, इच्छामि पडिक्कमिऊँ० बोलकर वंदित्तु सूत्र कहकर दो वांदणा देकर खडे होकर –

१८. अब्भुट्ठिओ से गुरु खमतखामणा करके दो वांदणा देवें। तत्पश्चात्

१९. आयरिअ उवज्झाए, करेमि भंते, इच्छामि ठामि, तस्सउत्तरी, अन्नत्थ० कहकर चंदेसु निम्मलयरा तक दो लोगस्स (लोगस्स न आता हो तो आठ नवकार) का कायोत्सर्ग करें, कायोत्सर्ग पूर्ण कर

२०. प्रकट लोगस्स, सव्वलोए अरिहंत चेईआणं, अन्नत्थ० कहकर, चंदेसु निम्मलयरा तक एक लोगस्स (न आता हो तो चार नवकार) का कायोत्सर्ग करें। कायोत्सर्ग पूर्ण कर

२१. पुक्खरवर–दीवड्ढे, सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं० वंदणवत्तियाए० अन्नत्थ० कहकर चंदेसु निम्मलयरा तक एक लोगस्स (न आता हो तो चार नवकार) का कायोत्सर्ग करें। कायोत्सर्ग पूर्ण कर

२२. सिद्धाणं बुद्धाणं कहे, सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं० अन्नत्थ० कहकर, एक नवकार का कायोत्सर्ग करे, कायोत्सर्ग के बाद नमोऽर्हत्० कहकर 'सुअदेवया' की थुई कहें। महिलाएँ इसके स्थान पर 'कमलदल' थुई कहें। बाद में

२३. खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं० अन्नत्थ० कहकर, एक नवकार का कायोत्सर्ग करें। कायोत्सर्ग के बाद नमोऽर्हत्० कहकर 'जिसे खित्ते साहू' थुई कहें। महिलाएँ इसके स्थान पर 'यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य' की थुई कहें।

२४. फिर एक नवकार कहकर, छट्ठे आवश्यक की मुँहपत्ति पडिलेहन कर, दो वांदणा देवें। तत्पश्चात्

२५. 'सामायिक, चउवीसत्थो, वंदण, प्रतिक्रमण, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण कर्युं छे जी' ऐसा कहकर छः आवश्यक का स्मरण करें। बाद में

२६. इच्छामो अणुसट्ठिं, नमो खमासमणाणं, नमोऽर्हत्० कहकर, योग मुद्रा में 'नमोऽस्तुवर्धमानाय' कहें। महिलाएँ इसके स्थान पर 'संसार दावानल' की तीन थुई कहें। इसके बाद

२७. नमुत्थुणं कहकर नमोऽर्हत्० कहकर स्तवन बोलें। तत्पश्चात्

२८. वरकनक० कहकर चार खमासमणा से भगवानादि को वंदना करे, पश्चात् दाहिना हाथ (हथेली) चरवले पर रखकर अड्ढाईज्जेसु० कहने के बाद

Scanned with CamScanner

२९. 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिअ पायच्छित्त विसोहणत्थं काउस्सग्ग करूँ? इच्छं देवसिअ पायच्छित्त विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं' अन्नत्थ कहकर, चंदेसु निम्मलयरा तक चार लोगस्स (न आता हो तो सोलह नवकार) का कायोत्सर्ग करें। कायोत्सर्ग पूर्ण कर, प्रकट लोगस्स कहने के बाद

३०. खमासमणा देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय संदिसाहुँ? इच्छं', दूसरा खमासमणा देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय करूँ? इच्छं' कहकर एक नवकार गिनकर सज्झाय कहें। पुन: एक नवकार गिने, इसके बाद

३१. खमासमणा देवे, 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! दुक्खक्खओ कम्मक्खओ निमित्तं काउस्सग्ग करूं? इच्छं दुक्खक्खओ कम्मक्खओ निमित्तं करेमि काउस्सग्गं' अन्नत्थ० बोलकर चार लोगस्स का सम्पूर्ण (न आता हो तो सोलह नवकार का) कायोत्सर्ग करें। कायोत्सर्ग पूर्ण कर, नमोऽर्हत्० कहकर लघु शांति बोलें। तत्पश्चात् प्रकट लोगस्स कहें।

३२. अब सामायिक पारने की विधि के अनुसार सामायिक पारें। लेकिन इरियावहियं से लोगस्स तक बोलने के बाद खमासमणा देकर चउक्कसाय, नमुत्थुणं, जावंति चेइआइं, खमासमणा देकर जावंत केवि साहू, नमोऽर्हत्० उवसग्गहरं और जयवीयराय कहने के बाद पूर्ववत् मुहपत्ति का पड़िलेहन करके सामायिक पारने के दो आदेश लेवें इत्यादि। (पृष्ठ क्र. २८)

नोट : (१) पाक्षिक, चातुर्मासिक और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण के पूर्व दिवस (प्रत्येक त्रयोदशी और भाद्रपद शुक्ल की तृतीया को) और साधु-साध्वी जी भगवंत विहार करके आए हो उस दिन सायंकाल देवसिअ प्रतिक्रमण मांगलिक होता है। इसमें पार्श्वनाथ प्रभु का चैत्यवंदन, कल्लाणकंदं की थुई, संतिकरं स्तवन तथा मन्नहजिणाणं (साधु-साध्वी जी भगवंतों द्वारा धम्मो मंगल) की सज्झाय बोली जाती है।

(२) अष्टमी के दिन देवसिअ प्रतिक्रमण में 'संसार दावानल दाहनीरं' की थुई बोली जाती है।

राइय प्रतिक्रमण की विधि

१. सर्वप्रथम सामायिक लेवें। फिर (पृष्ठ क्र. २६)

२. खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! कुसुमिण दुसुमिण उड्डावणी राईय पायच्छित्त विसोहणत्थं काउस्सग्ग करुं ? इच्छं, कुसुमिण दुसुमिण

Scanned with CamScanner

उड्डावणी राईय पायच्छित्त विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं', अन्नत्थ० कहकर 'सागरवर गंभीरा' तक चार लोगस्स (नहि आता हो तो सोलह नवकार)का कायोत्सर्ग करें। कायोत्सर्ग पूर्ण कर प्रकट लोगस्स कहें।

३. इसके पश्चात् खमासमणा देकर-' इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करूँ? इच्छं ' कहकर जगचिंतामणि से जयवीयराय तक चैत्यवंदन योगमुद्रा में करें।

४. इसके बाद एक खमासमणा देकर, 'भगवानहं', दूसरा खमासमणा देकर, 'आचार्यहं', तीसरा खमासमणा देकर 'उपाध्यायहं', चौथा खमासमणा देकर 'सर्वसाधुहं', कहने के बाद पुनः खमासमणा देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय संदिसाहुँ? इच्छं' कहकर खमासमणा देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय करुँ? इच्छं' बोलकर एक नवकार गिनकर भरहेसर की सज्झाय बोलकर एक नवकार गिनें।

५. इसके बाद इच्छकार सुहराई का पाठ कहें, फिर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् राईय पडिक्कमणे ठाऊँ? इच्छं' बोलकर दाहिना हाथ (मुट्ठी)चरवले के ऊपर रखकर-'सव्वसवि राईय दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ मिच्छा मि दुक्कड़' कहे और बाद में

६. नमुत्थुणं, करेमि भंते, इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, तस्सउत्तरी अन्नत्थ० कहकर चंदेसु निम्मलयरा तक एक लोगस्स (न आता हो तो चार नवकार) का कायोत्सर्ग करें। कायोत्सर्ग पूर्ण कर

७. प्रकट लोगस्स बोलकर सव्वलोए- अरिहंत चेईआणं, अन्नत्थ० कहकर चंदेसु निम्मलयरा तक एक लोगस्स (न आता हो तो चार नवकार) का कायोत्सर्ग करें। पश्चात्

८. पुक्खरवर-दीवड्ढे, 'सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तियाए', अन्नत्थ कहकर पंचाचार की आठ गाथा (नाणम्मि सूत्र) (न आता हो तो आठ नवकार) का कायोत्सर्ग करें। इसके बाद

९. सिद्धाणं बुद्धाणं कहकर तीसरे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहन करें। दो वांदणा देवें।

१०. अब 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! राईअं आलोऊँ? इच्छं, आलोएमि जो मे राईयो अईयारो', का पाठ कहने के बाद

Scanned with CamScanner

११. सात लाख तथा अठारह पाप स्थानक सूत्रों कहकर–'सव्वसवि राईय दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इच्छं, तस्स मिच्छा मि दुक्कड़' कहने के बाद

१२. (दाहिना घुटना उपर कर) नवकार, करेमि भंते, इच्छामि पडिक्कमिऊँ जो मे राईओ० का पाठ कहकर वंदित्तु बोले। अब्भुट्ठिओमि से खडे होकर सूत्र पूर्ण करें

१३. बाद, दो वांदणा– इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अब्भुट्ठिओ मि. सूत्र कहकर, दो वांदणा करके दोनों हाथ जोड़कर

१४. आयरिअ उवज्झाए, करेमि भंते, इच्छामि ठामि, तस्सउत्तरी अन्नत्थ० कहकर तप चिंतवन (न आता हो तो सोलह नवकार) का कायोत्सर्ग करें, कायोत्सर्ग पूर्ण करके प्रकट लोगस्स कहें और छट्ठे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहन करके दो वांदणा देवें। पश्चात्

१५. सकल तीर्थ बोलकर यथाशक्ति पच्चक्खाण करें या संकल्प करें।

१६. बाद में 'सामायिक, चउविसत्थो, वंदन, प्रतिक्रमण, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण कर्युं छे जी।' यदि धारणा की हो तो, 'धार्युं छे जी।' है कहें।

१७. इसके पश्चात् इच्छामो अणुसट्ठिं, नमोऽर्हत् कहकर, विशाललोचन दलं कहें। महिलाएँ इसके बदले संसार दावानल की तीन गाथाएँ कहें।

१८. नमुत्थुणं, अरिहंताणं चेईयाणं० अन्नत्थ० कहकर एक नवकार का कायोत्सर्ग करने के बाद नमो अरिहंताणं से कायोत्सर्ग पूर्ण कर नमोऽर्हत्० कहकर 'कल्लाणकंदं' की पहली गाथा कहें।

१९. इसके पश्चात् लोगस्स कहकर, सव्वलोए अरिहंत चेईआणं, अन्नत्थ कहकर एक नवकार का कायोत्सर्ग करें, कायोत्सर्ग पूर्ण कर 'कल्लाणकंदं' की दूसरी गाथा कहें।

२०. इसके बाद पुक्खरवर–दीवड्ढे, सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए, अन्नत्थ० कहकर एक नवकार का कायोत्सर्ग करें। कायोत्सर्ग पूर्ण कर कल्लाणकंदं की तीसरी गाथा कहें।

२१. इसके बाद सिद्धाणं बुद्धाणं, वेयावच्चगराणं, अन्नत्थ० कहकर एक नवकार का कायोत्सर्ग करें। कायोत्सर्ग पूर्ण कर नमोऽर्हत्० कहकर कल्लाणकंदं की चौथी गाथा कहें। तत्पश्चात्

Scanned with CamScanner

२२. नमुत्थुणं कहकर, एक-एक खमासमणा देकर, भगवानहं, आचार्यहं, उपाध्यायहं, और सर्वसाधुहं कहें, इसके पश्चात् दाहिना हाथ (हथेली) चरवले पर रखकर अड्ढाईज्जेसु कहें।

२३. अब, खमासमणा देकर सीमंधर स्वामी के तीन दोहे बोलकर सीमंधर स्वामी का चैत्यवंदन करें। (पृष्ठ क्र. १२५ से १२७)

२४. खमासमणा देकर सिद्धाचलजी के तीन दोहे कहकर सिद्धाचलजी का चैत्यवंदन करें। (पृष्ठ क्र. १२७ से १२८)

२५. सामायिक पारने की विधि के अनुसार सामायिक पारें। (पृष्ठ क्र. २८)

तपचिंतवन काउस्सग्ग में मन में किया जाने वाला चिंतवन

श्री महावीर स्वामी भगवंत ने छः माह का तप किया था।
हे चेतन! ऐसा तप तूँ कर।
शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है। (उत्तर का चिंतन मन में ही करना है।)
१ दिन कम छः मासी तप कर- शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।
२ दिन कम छः मासी तप कर- शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।
३ दिन कम छः मासी तप कर- शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।
इस प्रकार १-१ दिन कम करते हुए,
''२९ दिन कम छःमासी तप कर - शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।
पाँच मासी तप कर - शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।''
१-२-३-४-५ दिन कम पाँच मासी तप कर -
शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।
६-७-८-९-१० दिन कम पाँच मासी तप कर -
शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।
११-१२-१३-१४-१५ दिन कम पाँच मासी तप कर -
शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।
१६-१७-१८-१९-२० दिन कम पाँच मासी तप कर -
शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।
२१-२२-२३-२४-२५ दिन कम पाँच मासी तप कर -
शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

Scanned with CamScanner

चार मासी तप कर शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।
(यहाँ आगे पाँच मासी तप के समान ५–५ दिन कम करते हुए शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है। सोचना)

यावत् तीन मासी तप कर शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

(इसी प्रकार ५–५ दिन कम यावत्) दो मासी तप कर शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

(इसी तरह ५–५ दिन कम यावत्) मासक्षमण तप कर शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

१ उपवास न्यून मासक्षमण तप कर शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

(ऐसे १२ उपवास तक एक एक उपवास कम करना

१३ उपवास कम मासक्षमण तप कर शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

चौतीस भक्त कर शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

(दो दो भक्त कम करते हुए) दस भत्त कर शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

अट्ठम कर शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

इसी प्रकार, ''छट्ठ, उपवास, आयम्बिल, नीवी, एकासना, बियासना, पुरिमुड्ढ, साढपोरसी, पोरसी, नवकारसी कर'' तक स्वयं से पूछें।

पूर्व में जो तप किया हो, जहाँ वह तप आए वहाँ से, 'शक्ति नहीं कहने' के स्थान पर 'शक्ति है, परिणाम नहीं है' ऐसा चिंतन करें, आज जो तप करना हो, वह तप जब आए तो, ''शक्ति है, परिणाम है'' ऐसा चिंतन करना चाहिए। तत्पश्चात्, उसके बाद के तप का चिंतन किए बिना ही 'नमो अरिहंताणं' कहकर कायोत्सर्ग पारें।

श्री सीमंधर स्वामी के दोहे

अनंत चोवीसी जिन नमुं, सिद्ध अनंती कोड;
केवलधर मुगते गया, वंदुं बे कर जोड़ १

बे कोडी केवलधरा, विहरमान जिन वीश;
सहसकोडी युगल नमुं, साधु नमुं निशदिश २

जे चारित्रे निर्मला, जे पंचानन सिंह;
विषय कषाय–नागं जिया, ते प्रणमुं निशदिश ३

Scanned with CamScanner

श्री सीमंधर स्वामी का चैत्यवंदन

श्री सीमंधर वीतराग, त्रिभुवन तुमे उपगारी,
श्री श्रेयांस पिता कुले, बहु शोभा तुमारी १

धन्य धन्य माता सत्यकी, जेणे जायो जयकारी;
वृषभ लंछन बिराजमान, वंदे नरनारी २

धनुष पांचसे देहडी ए, सोहीए सोवन वान
कीर्तिविजय उवज्झायनो, विनय धरे तुम ध्यान ३

श्री सीमंधर स्वामी का स्तवन

तमे महाविदेह जईने, कहेजो चांदलिया! (२) सीमंधर तेड़ा मोकले
तमे भरतक्षेत्रना दुःख, कहेजो चांदलिया! (२) सीमंधर तेड़ा मोकले १

अज्ञानता अहीं छवाई गई छे, तत्त्वो नी वाणी भुलाई गई छे,
अेवा आत्मा ना दुःख मारा, कहेजो चांदलिया; (२) सीमंधर० २

पुद्गल ना मोहमां फसाई गयो छुँ,
कर्मो नी जाळ मां जकड़ाई गयो छुँ
अेवा कर्मो ना दुःख मारा, कहेजो चांदलिया; (२) सीमंधर० ३

मारुं नहोतुं तेने, मारूं करी मान्युं,
मारूं हतुं तेने, नहीं पीछान्युं,
अेवा मूर्खताना दुःख मारा, कहेजो चांदलिया; (२) सीमंधर० ४

सीमंधर! सीमंधर! हृदय मां धरतो,
प्रत्यक्ष दर्शन नी, आशा हूँ राखतो,
अेवा वियोगना दुःख मारा, कहेजो चांदलिया; (२) सीमंधर० ५

संसारी सुख मने, कारमुं ज लागे,
प्रभु तुम विण वात, कहूँ कोनी पासे?
अेवा वीरविजयना दुःख, कहेजो चांदलिया; (२) सीमंधर० ६

Scanned with CamScanner

सीमंधर स्वामी की थुई

सीमंधर जिनवर, सुखकर साहिब देव,
अरिहंत सकलनी, भाव धरी करूं सेव,
सकलागम पारग, गणधर भाषित वाणी,
जयवंती आणा, ज्ञानविमल गुण खाणी।। १

सिद्धाचल जी का दोहा

एकेकुं डगलुं भरे शेत्रुंजा समुं जेह,
ऋषभ कहे भव क्रोड़ना, कर्म खपावे तेह १

शेत्रुंजा समुं तीरथ नहि, ऋषभ समो नहि देव
गौतम सरखा गुरु नहीं, वळी वळी वंदुं तेह २

सिद्धाचल समरुं सदा, सोरठ देश मोझार
मनुष्य जन्म पामी करी, वंदुं वार हजार ३

श्री सिद्धाचलजी का चैत्यवंदन

श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र दीठे दुर्गति वारे;
भाव धरीने जे चढ़े, तेने भव पार उतारे १

अनंत सिद्ध नो अेह ठाम, सकल तीरथनो राय,
पूर्व नवाणुं ऋषभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय २

सूरज कुण्ड सोहामणो, कवडजक्ष अभिराम,
नाभिराया कुलमंडणो, जिनवर करुं प्रणाम ३

श्री सिद्धाचलजी का स्तवन

सिद्धाचलना वासी, विमलाचलना वासी, जिनजी प्यारा
आदिनाथने वंदन हमारा ०१

प्रभुजीनुं मुखडुं मलके, नयनोमांथी वरसे, अमीरस धारा,
आदिनाथ ने वंदन हमारा ०२

प्रभुजीनुं मुखडुं छे मलक मिलाकर, दिल में भक्ति की ज्योत जलाकर
भज ले प्रभु ने भावे, दुर्गति कदी न आवे, जिनजी प्यारा,
आदिनाथ ने वंदन हमारा ०३

Scanned with CamScanner

भमीने लाख चोरासी हुं आव्यो, पुण्ये दरिशन तुम्हारा हुं पायो,
धन्य दिवस मारो, भवना फेरा टाळो, जिनजी प्यारा०

आदिनाथ ने वंदन हमारा ०४

प्रभुजी अमे तो मायाना विलासी, तमे छो मुक्तिपूरीना वासी,
कर्म बंधन कापो, मोक्ष सुख आपो, जिन जी प्यारा०

आदिनाथ ने वंदन हमारा ०५

अरजी उर मां धरजो अमारी, अमने आशा छे प्रभुजी तुम्हारी,
कहे **हर्ष** हवे, साचा स्वामी तमे, जिनजी प्यारा

आदिनाथ ने वंदन हमारा ०६

श्री सिद्धाचल की थुई

शत्रुंजय मंडन, ऋषभ जिणंद दयाल, मरुदेवा नंदन, वंदन करुं त्रण काळ;
अे तीरथ जाणी, पूर्व नवाणुं वार, आदीश्वर आव्या, जाणी लाभ अपार १

Scanned with CamScanner

पाक्षिक प्रतिक्रमण की विधि

१. दैवसिक प्रतिक्रमण में वंदित्तु सूत्र कहने तक की सारी विधि करनी होती है, लेकिन चैत्यवंदन के रूप में सकलाऽर्हत् सूत्र और थुई के रूप में स्नातस्या सूत्र कहना है। 'देवसि' के जगह 'पक्खि' कहना है।

२. इसके बाद एक खमासमणा देकर ''देवसिअ आलोईअ पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पक्खी मुहपत्ति पडिलेहुं? (गुरू कहेंगे– पडिलेह) इच्छं'' कहकर मुँहपत्ति का पडिलेहन करके दो वांदणा देना होगा।

३. इसके पश्चात् 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! संबुद्धा खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतरं, पक्खिअं खामेंऊं? इच्छं, खामेमि पक्खिअं, एक पक्खस्स पनरस राई दियाणं जंकिंचि अपत्तिअं... तस्स मिच्छा मि दुक्कडं' का पाठ कहना है।

४. अब ''इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पक्खिअं आलोऊं? इच्छं, आलोएमि जो में पक्खिओ अईआरो कओ... दुक्कड़ं '' कहे।

Scanned with CamScanner

५. इसके बाद ''इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पक्खि अतिचार आलोऊं? इच्छं कहकर पक्खि अतिचार कहें।

६. अतिचार कहने के बाद–सव्वसवि पक्खिअ, दुच्चिंतिय, दुब्भासिय, दुच्चिट्ठिय इच्छाकारेण... इच्छं, तस्स मिच्छा मि दुक्कड़ं। कहना होगा।

७. तत्पश्चात् 'इच्छकारी भगवन्! पसाय करी पक्खि तप प्रसाद करावशोजी' (गुरू न हो तो स्वयं कहें) ''पक्खि लेखे चउत्थेणं–एक उपवास, दो आयंबिल, तीन निवी, चार एकासणा, आठ बियासणा, दो हजार स्वाध्याय, यथाशक्ति तप करके पहुँचाना।

(प्रत्येक १५ दिनों में इतना तप प्रत्येक को करना चाहिए, यदि इतना तप कर लिया हो या तपप्रारम्भ किया हो तो 'पईट्ठिओ' कहे। यदि इतना तप बाद में पूरा करने की भावना हो तो तहत्ति कहना चाहिए किन्तु यदि निर्दिष्ट तप करने की शक्यता और शक्ति अनुभूत न होती हो तो 'मौन' रहना चाहिए।

८. इसके पश्चात् वांदणा देकर ''इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पत्तेअ खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर पक्खिअं खामेऊं? इच्छं खामेमि पक्खिअं, एक पक्खस्स, पनरस राई दियाणं जंकिंचि'' कहकर पुनः दो वांदणा देवे।

९. इसके बाद देवसिअ आलोईय पडिक्कंता, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पक्खिअं पडिक्कमुं? सम्मं पडिक्कमामि इच्छं कहकर करेमि भंते, इच्छामि पडिक्कमिऊं जो में पक्खिओ अईआरो... कहें।

१०. अब खमासमणा देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खि सूत्र कढुं? (संभलेमि) इच्छं' कहकर तीन नवकार गिनकर साधु भगवंत पक्खि सूत्र बोलें। (यदि साधु भगवंत न हो तो श्रावक को वंदित्तु सूत्र कहना चाहिए।) अन्य प्रतिक्रमण करने वालों को कायोत्सर्ग मुद्रा में यह श्रवण करना है।

११. इसके बाद सूअदेवया की थुई कहनी है।

१२. तत्पश्चात् नीचे बैठकर, दाहिना घुटना ऊँचा रखकर एक नवकार, करेमि भंते, इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिओ अईयारो० कहकर पक्खि वंदित्तु कहें।

१३. करेमि भंते, इच्छामि ठामि, तस्सउत्तरी, अन्नत्थ कहकर १२ लोगस्स (चंदेसु निम्मलयरा तक... यदि लोगस्स न आता हो तो ४८ नवकार) का कायोत्सर्ग करें।

Scanned with CamScanner

१४. कायोत्सर्ग पूर्ण करने के बाद प्रकट लोगस्स कहकर मुँहपत्ति पड़िलेहन करके दो वांदणा देवें। इसके बाद

१५. इच्छाकारेण संदिसह भगवन् समाप्त खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर पक्खिअं खामेउं? इच्छं खामेमि पक्खिअं एक पक्खस्स, पनरस राई दियाणं जंकिंचि... कहें।

१६. अब खमासमणा देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पक्खि खामणा खामुं? इच्छं कहकर चार खामणा खामें (न आता हो तो प्रत्येक बार हाथ जमीन पर स्थापित करके नवकार कहकर 'सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि' कहें। किन्तु तीसरी बार खामणा के समय नवकार कहकर 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं' कहें।)

१७. इसके पश्चात् देवसिय प्रतिक्रमण में 'वंदित्तु सूत्र कहने के बाद दो वांदणा देकर' वहाँ से लेकर सामायिक पारने तक की जो विधि की जाती है वैसी ही विधि करनी होगी। किन्तु 'सुहदेवया' के स्थान पर 'ज्ञानादि गुण युतानां' 'जिसे खित्ते साहु' के स्थान पर 'यस्याः क्षेत्रं...' स्तवन के स्थान पर 'अजित शांति सूत्र' सज्झाय के स्थान पर 'उवसग्गहरं' तथा 'संसार दावानल' सूत्र और लघुशांति के स्थान पर बड़ीशांति कहेंगे। अंत में 'संतिकरं' सूत्र बोले तथा जहाँ-जहाँ देवसि शब्द हो वहाँ-वहाँ पक्खि शब्द कहें।

चातुर्मासिक प्रतिक्रमण की विधि

पक्खि प्रतिक्रमण की विधि के अनुसार ही करना है, लेकिन 'पक्खि' शब्द के बदले 'चौमासी' शब्द बोला जायेगा। इसके अतिरिक्त १२ लोगस्स के स्थान पर २० लोगस्स (चंदेसु निम्मलयरा तक....यदि लोगस्स न आता हो तो ८० नवकार) का कायोत्सर्ग करें। तथा चौमासी तप में ''चौमासी लेखे एक छट्ठ, दो उपवास, चार आयम्बिल, छः नीवी, आठ एकासना, सोलह बियासना, चार हजार स्वाध्याय यथाशक्ति तप करके पहुँचाओ' यह कहना होगा।

सांवत्सरिक प्रतिक्रमण की विधि

सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में पाक्षिक प्रतिक्रमण की विधि के अनुसार ही सारी क्रियाएँ करनी होती है। सिर्फ पक्खी शब्द के स्थान पर सांवत्सरिक शब्द कहना होता है। १२ लोगस्स के कायोत्सर्ग के स्थान पर ४० लोगस्स (चंदेसु निम्मलयरा तक) और एक नवकार (लोगस्स न आता हो तो १६० नवकार) का कायोत्सर्ग करना होता है।

Scanned with CamScanner

तपस्या के स्थान पर 'संवत्सरी के लेखे एक अट्ठम, तीन उपवास, छः आयम्बिल, ९ नीवी, बारह एकासना, चौबीस बियासना, छः हजार स्वाध्याय यथाशक्ति तप करके पहुँचाओ' इस प्रकार कहना होता है।

विशेष ध्यान रखने योग्य : पाक्षिक, चातुर्मासिक और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में छींक नहीं आए इस बात की विशेष सावधानी रखनी चाहिए। यदि अतिचार कहने के पूर्व छींक आ जाए तो प्रतिक्रमण पुनः प्रारम्भ करना होता है और यदि अतिचार कहने के पश्चात् छींक आए तो सज्झाय बोलकर नवकार कहने के पश्चात् छींक का कायोत्सर्ग करना होता है, इसके बाद ही दुक्खक्खओ कम्मक्खओ का कायोत्सर्ग करना चाहिए।

छींक का कायोत्सर्ग करने की विधि

खमासमणा देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! क्षुद्रोपद्रव ओहड्डावणत्थं काउस्सग्ग करूं? इच्छं, क्षुद्रोपद्रव ओहड्डावणत्थं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ सूत्र कहकर चार लोगस्स (सागरवर गम्भीरा तक), यदि लोगस्स न आता हो तो १६ नवकार का कायोत्सर्ग करना चाहिए। कायोत्सर्ग पूर्ण कर नमोऽर्हत् कहकर नीचे लिखी थुई कहने के बाद लोगस्स कहना होता है।

थुई : सर्वे यक्षाम्बिकाद्या ये, वैयावृत्य करा जिने;
क्षुद्रोपद्रवसंघातं ते द्रुतं द्रावयन्तु नः ॥

पच्चक्खाण

श्री ऋषभदेव भगवान के शासन में एक वर्ष तक के उपवास किए जाते थे। दूसरे तीर्थंकर से २३ वें तीर्थंकर के शासन में आठ माह तक के उपवास किए जाते थे, जबकि वर्तमान में श्री महावीर प्रभु के शासन में अधिक से अधिक छः माह तक के उपवास किए जाते हैं, किन्तु वर्तमान में एक बार में अधिकतम् १६ उपवास के पच्चक्खाण ही एक साथ दिए जाते है।

उपवास के पच्चक्खाण सूत्र में 'अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाई' पद के पूर्व जितने दिनों के उपवास का पच्चक्खाण करना हो, उसे दो से गुणा करके दो जोड़कर जो संख्या आती है, वह संख्या कहकर उपवास पच्चक्खाण सूत्र में शेष सभी कहा जाएगा।

दो उपवास में	(२ x २) + २ = ६	– छट्ठ भत्तं
तीन उपवास में	(३ x २) + २ = ८	– अट्ठम भत्तं
चार उपवास में	(४ x २) + २ = १०	– दस भत्तं
आठ उपवास में	(८ x २) + २ = १८	– अठारह भत्तं
सोलह उपवास में	(१६ x २) + २ = ३४	– चौत्तीस भत्तं

Scanned with CamScanner

पौषध की विधि

मन्नहजिणाणं सज्झाय में श्रावक के करने योग्य ३६ कर्त्तव्य बताए गए हैं। उसमें ''पव्वेसु पोसहवयं'' पद द्वारा पर्व तिथि पर श्रावक को पौषध करना चाहिए, ऐसा वर्णन है, ये पौषध चार प्रकार के हैं–१. आहार पौषध–एकासणा, आयम्बिल, उपवास आदि। २. शरीर सत्कार पौषध–स्नान विलेपन आदि से शरीर को विभूषित अर्थात् शरीर का सत्कार न करना। ३. ब्रह्मचर्य पौषध–बह्मचर्य का पालन करना। ४. अव्यापार पौषध–सभी सावद्य अर्थात् पापमय व्यापार का परित्याग करना।

ये चारों प्रकार के पौषध देश और सर्व ऐसे दो–दो प्रकार के होने से मुख्यत: आठ प्रकार के पौषध होते हैं। लेकिन पूर्वाचार्य की परम्परा से वर्तमान में केवल आहार पौषध ही देश और सर्व दोनों रूपों में होता है और अन्य प्रकार के पौषध 'सर्व' रूप में ही किए जाते हैं।

चउविहार उपवास के साथ किए जाने वाले पौषध को सर्व रूप का आहार पौषध कहा जाता है, और तिविहार उपवास, आयम्बिल, निवि, एकासना के साथ किए जाने वाले पौषध को देश रूप का पौषध कहा जाता है। दिन या रात्रि के पौषध में कम से कम एकासना तप तो करना ही चाहिए।

पौषध दिन–रात का (आठ प्रहर का), मात्र दिन या मात्र रात्रि का भी किया जा सकता है।

पौषध हेतु आवश्यक उपकरण

चरवला, मुँहपत्ति, आसन, धोती (शुद्ध), सूत का कंदोरा, खेस, शाल, मात्रा के लिए धोती (अशुद्ध), स्वाध्याय हेतु पुस्तकें, सापडा, नवकारवाली।

यदि रात्रि का पौषध हो तो उपरोक्त उपकरणों के साथ संथारा (शयन हेतु) सूत का उत्तरपट्टा कुंडल और दण्डासन भी चाहिए।

पौषध लेने की विधि

प्रात: काल, स्नान किए बिना ही, सूर्योदय होने के पूर्व, राइय प्रतिक्रमण पूर्ण करने के बाद, पौषध लेना चाहिए। यदि राइय प्रतिक्रमण शेष रह गया हो तो, उसे पौषध लेने के पश्चात् पूर्ण किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

(१) खमासमणा देकर इरियावहियं करना। (जहाँ जहाँ इरियावहियं करना हो, वहाँ-वहाँ इरियावहियं, तस्सउत्तरी, अन्नत्थ कहकर, चंदेसु निम्मलयरा तक लोगस्स का कायोत्सर्ग करे, कायोत्सर्ग पार कर, प्रकट लोगस्स कहना होता है।)

(२) बाद में खमासमणा देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पोसह मुँहपत्ति पडिलेहुं?' (गुरू कहेंगे पडिलेह) 'इच्छं' कहकर मुँहपत्ति का ५० बोल से पडिलेहन करें।

(३) इसके बाद खमासमणा देकर, 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पोसह संदिसाहुं? (गुरू कहेंगे : संदिसावेह) 'इच्छं' कहकर दोनों हाथ जोड़कर, नवकार गिनकर, 'इच्छाकारी भगवन्! पसाय करी पोसह दंडक उच्चरावो जी' कहें, तब गुरूमहाराज (न हों तो वरिष्ठ श्रावक) पौषध लेने का निम्नलिखित 'करेमि भंते' सूत्र कहें।

पौषध लेने का (पच्चक्खाण) सूत्र

करेमि भंते पोसहं, आहार पोसहं देसओ सव्वओ, शरीर सक्कार पोसहं सव्वओ, बंभचेर-पोसहं सव्वओ, अव्वावार-पोसहं सव्वओ, चउव्विहं पोसहं ठामि 'जाव दिवसं (अहोरत्तं), शेषदिवस-रत्तं पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि।

मात्र दिन का ही पौषध करना हो तो 'जाव दिवसं' कहना होता है। मात्र रात्रि का ही पौषध करना हो तो 'जाव शेषदिवस - रत्तं' कहें। यदि दिन और रात आठ प्रहर का पौषध करना हो तो 'जाव अहोरत्तं' कहें।

(४) अब खमासमणा देकर, 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक मुँहपत्ति पडिलेहुं?(गुरू कहेंगे : पडिलेहो) इच्छं, कहकर ५० बोल से मुँहपत्ति का पडिलेहन करें। बाद में खमासमणा देकर, 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक संदिसाहुं? (गुरू कहेंगे : संदिसावेह) 'इच्छं', कहकर, खमासमणा देकर, 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक ठाऊं? (गुरू कहेंगे : ठाएह) 'इच्छं', कहकर, दोनों हाथ जोड़कर, एक नवकार गिन कर, 'इच्छकारी भगवन्! पसाय करी सामायिक दण्डक उच्चरावो जी' कहे। गुरू (न हो तो वरिष्ठ श्रावक) करेमिभंते उच्चरावेंगे। ध्यान रहे कि 'जावनियमं' के स्थान पर 'जाव पोसहं' कहेंगे।

Scanned with CamScanner

(५) इसके बाद खमासमणा देकर, 'इच्छकारेण संदिसह भगवन्! बेसणे संदिसाहुं? (गुरू कहेंगे : संदिसावेह) 'इच्छं', कहकर, खमासमणा दे और कहें 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बेसणे ठाऊं? (गुरू कहेंगे : ठाएह) इच्छं, कहकर, खमासमणा देकर, 'इच्छकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय संदिसाहुं? (गुरू कहेंगे : संदिसावेह) 'इच्छं' कहकर खमासमणा देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय करूं? (गुरू कहेंगे : करेह) 'इच्छं', बोलकर, दोनों हाथ जोड़कर, तीन नवकार गिनने के बाद

प्रतिक्रमण शेष हो तो क्रमांक ६ के अनुसार करना है। यदि प्रतिक्रमण कर लिया हो तो क्रमांक ७ के अनुसार करना है।

(६) प्रतिक्रमण शेष हो तो अब खमासमणा देकर, राईय प्रतिक्रमण में बताई गई विधि (देखे पृष्ठ क्रं. १२१) के अनुसार आदेश मांग कर, कुसुमिण दुसुमिण के कायोत्सर्ग से प्रतिक्रमण प्रारम्भ करना। प्रतिक्रमण के बाद पडिलेहण करना है।

(क) लेकिन जहाँ करेमि भंते सूत्र आए वहाँ 'जाव नियमं' के स्थान पर 'जाव पोसहं' कहना होगा।

(ख) सात लाख और अठारह पापस्थानक के बदले 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! गमणागमणे आलोऊं? इच्छं' कहकर गमणागमणे कहें–

गमणागमणे

'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! गमणागमणे आलोऊं? इच्छं'

ईर्या समिति, भाषा समिति, एषणा समिति, आदान-भंड-मत्त-निक्खेवणा समिति, पारिष्ठा पनिका समिति, मनो गुप्ति, वचन गुप्ति, काय गुप्ति; ए पांच समिति, त्रण गुप्ति, ए अष्ट प्रवचन माता; श्रावकतणे धर्मे सामायिक-पोसह लीधे, रूडीपेरे पाळी नहीं, खंडना-विराधना थइ होय, ते सवि हुं मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कड़ं।

(ग) अंत में, कल्लाण कंदं की चौथी थुई कहने के बाद नमुत्थुणं कहकर खमासमणा देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बहुवेल संदिसाहुं?(गुरू कहेंगे : संदिसावेह) 'इच्छं' कहकर खमासमणा देवे ओर कहे इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बहुवेल करशुं? (गुरू कहें : करेह) 'इच्छं' कहकर भगवानादि को वंदन करके अड्ढाईज्जेसु कहें।

(छोटी बड़ी प्रत्येक प्रकार की क्रिया या प्रवृत्ति गुरू से आदेश मांग कर ही करनी चाहिए; लेकिन आँख मटकाने आदि की जो क्रियाएँ बारम्बार करनी पडती है, उसकी आज्ञा मांगनी अशक्य होने के कारण ऐसी बार बार, की जाने वाली प्रवृत्तियों की आज्ञा, इस आदेश से मांगी जाती है।)

Scanned with CamScanner

(७) यदि पौषध लेने के पूर्व प्रतिक्रमण कर लिया हो तो ऊपर क्रमांक पाँच तक की विधि करने के बाद, इस प्रकार करना है– एक खमासमणा देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बहुवेल संदिसाहुं? (गुरू कहेंगे संदिसावेह) इच्छं कहकर खमासमणा देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बहुवेल करशुं? (गुरू कहेंगे करेह) इच्छं कहकर पडिलेहण करना है।

पडिलेहण की विधि

इरियावहियं कहकर, खमासमणा देकर, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पडिलेहण करूं? (गुरू– करेह) इच्छं, कहकर मुँहपत्ति आदि पाँचवाना पडिलेहन करें।

नोट : (क) इन पाँचवाना में मुँहपत्ति, चरवला, आसन, शुद्ध धोती तथा सूत के कंदोरे का पडिलेहन करना है)

(ख) पडिलेहन करते समय बोल के अतिरिक्त कुछ भी नहीं बोला जाता है, यदि भूल से कुछ कहा गया हो तो इरियावहियं कहकर शेष पडिलेहन करें।

(ग) सारे उपकरण एकत्र करके ही पडिलेहन करें। यदि कोई वस्तु लेनी पड़े तो दण्डासन या चरवले से पूँजते पूँजते लेने जावें, बिना पूँजे जाने पर पुनः इरियावहियं करना होता है।

(घ) मुँहपत्ति पडिलेहन की विधि के अनुसार पुरिम– अक्खोड़ा – पक्खोड़ा आदि करते हुए, मुँहपत्ति का पडिलेहन ५० बोल कहकर, चार कोने वाली वस्तु का पडिलेहन २५ बोल कहकर और गोल वस्तु का पडिलेहन १० बोल कहकर करना चाहिए, उस समय कोई जीव–जंतु दिखाई दे तो उसे जयणा पूर्वक एक किनारे कर देवें।

(८) इसके बाद, इरियावहियं – खमासमणा देकर, इच्छकारीभगवन् पसाय करी, पड़िलेहणा पड़िलेहावोजी (गुरू – पड़िलेहो) इच्छं, कहकर वरिष्ठों के वस्त्रों (खेश) का पड़िलेहन करें, इसके साथ ही तपस्वी, बीमार, वृद्ध आदि पौषार्थियों के भी पड़िलेहन का लाभ लिया जा सकता है। इसके पश्चात् खमासमणा देकर, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! उपधि मुँहपत्ति पड़िलेहुं? (गुरू – पड़िलेहो) इच्छं कहकर, ५० बोल से मुँहपत्ति पड़िलेहन करें, फिर खमासमणा देकर, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! उपधि संदिसाहुं? (गुरू कहेंगेः संदिसावेह) इच्छं, कहकर खमासमणा देकर, 'इच्छाकारेण संदिसह

Scanned with CamScanner

भगवन्! उपधि पड़िलेहुं? (गुरू – पड़िलेहो) इच्छं,’ कहकर शेष सभी उपधि का पड़िलेहन करे। (चार कोने वाली वस्तु के लिए २५, गोल वस्तु के लिए १० बोल कहे) अंत में दण्डासन का पड़िलेहन १० बोल से करें।

(९) इसके पश्चात्, इरियावहियं कहकर दण्डासन से काजा लें और उसे खोजे (काजा में सचित्त अनाज, हरी वनस्पति या चींटी, मक्खी, मच्छर आदि के कलेवर निकले तो गुरू के पास से आलोचना लेवें) योग्य स्थान पर जाकर ‘अणुजाणह जस्सुग्गहो’ कहकर काजा परठें, फिर तीन बार ‘वोसिरई’ कहकर इरियावहियं करे। (काजा लेने वाले को आयम्बिल का विशेष फल प्राप्त होता है, इसलिए उपयोग पूर्वक काजा लें)

(१०) इसके बाद, कंधे पर खेस डालकर देव वंदन करे। फिर खेस निकाल कर, खमासमणा देकर, ‘इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय करूं?’ (गुरू–करेह) इच्छं कहकर नवकार बोले और मन्नहजिणाणं सज्झाय कहें।

इसके पश्चात् स्वाध्याय जाप आदि करें।

स्थापनाचार्यजी पडिलेहण का १३ बोल

(१) शुद्ध स्वरूप के धारक गुरु, (२) शुद्ध ज्ञानमय, (३) शुद्ध दर्शनमय, (४) शुद्ध चारित्रमय, (५) शुद्ध श्रद्धामय, (६) शुद्ध प्ररूपणामय, (७) शुद्ध स्पर्शनामय, (८) पंचाचार पाले, (९) पलावे, (१०) अनुमोदे (११) मनगुप्ति, (१२) वचनगुप्ति (१३) कायगुप्तिए गुप्ता।

यह तेर बोल बोलने पूर्वक पंच परमेष्ठि भगवंतो का पडिलेहण करना।

सुबह अंदर के भगवान से शुरू करके बाहर के गरम रूमाल तक का, शाम को बाहर के रूमाल से शुरु करके भगवान तक का पडिलेहण २५, १०, १३ वगैरह बोल बोलनेपूर्वक करना।

पोरसी पाठ की विधि

(११) सूर्योदय के पश्चात् पोना प्रहर व्यतीत हो जाए तब आगे लिखे अनुसार पोरसी पाठ करें–

खमासमणा देकर, ’इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बहुपडिपुन्ना पोरिसि?

Scanned with CamScanner

इच्छं', कहकर खमासमणा देकर, इरियावहियं पडिक्कमे, लोगस्स बोलने के बाद खमासमणा देकर, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पडिलेहन करूं? इच्छं, कहकर ५० बोल से मुँहपत्ति पडिलेहें।

(१२) इसके पश्चात्, गुरू महाराज के समक्ष राई मुँहपत्ति करें, लेकिन यदि राईय प्रतिक्रमण गुरू महाराज से आदेश लेकर किया हो तो राईय मुँहपत्ति करने की आवश्यकता नहीं है। यदि पौषध उच्चारने तथा पडिलेहनादि की विधि का आदेश गुरू भगवंत से न मांगा हो तो, राई मुँहपत्ति करने के पहले उपधि पडिलेहु? तक के आदेश गुरू भगवंत से मांगे और सज्झाय करें।

राईय मुँहपत्ति की विधि

खमासमणा देकर, इरियावहियं पडिक्कमें, खमासमणा देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! राई मुँहपत्ति पडिलेहु? इच्छं, कहकर मुँहपत्ति का ५० बोलों से पडिलेहने के बाद दो बार वांदणा देवें। फिर, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! राईअं आलोऊं? इच्छं, कहकर उसका पाठ कहें। बाद में सव्वसवि राईय० कहकर, पदवी धारी गुरू हो तो, दो वांदणा देवें, नहीं तो एक खमासमणा देवे, अब इच्छकार कहकर, एक खमासमणा देकर, अब्भुट्ठिओ से क्षमायाचना करें। इसके बाद, दो वांदणा देकर, इच्छकारी भगवन्! पसाय करी पच्चक्खाण का आदेश देशो जी। कहकर यथाशक्ति पच्चक्खाण लेवें। तत्पश्चात् खमासमणा दें। फिर सभी गुरू भगवंतों को वंदन करें।

(१३) अब चरवला बाईं बगल में और मुँहपत्ति दाहिने हाथ में रखकर, आसन को कंधे पर रखकर तथा शॉल लेकर जिनेश्वर के दर्शन के लिए जिनालय जावें। चैत्यवंदन-देववंदन आदि कर वापस उपाश्रय में आवें।

(१४) उपाश्रय या जिनालय में प्रवेश करते समय 'निसीहि' और बाहर निकलते समय 'आवस्सहि' तीन बार कहना भूलना नहीं है और जब भी उपाश्रय से १०० कदम या अधिक दूरी जाना हो तब इरियावहियं पडिक्कमें तथा गमणागमणे का सूत्र कहना होगा; इसी प्रकार मात्रा आदि करने या ठल्ले जाकर आने के बाद भी इरियावहियं पडिक्कमें तथा गमणागमणे सूत्र कहे।

(१५) इसके बाद दोपहर में देववंदन करे। यदि चातुर्मास हो तो देववंदन करने के पूर्व इरियावहियं पडिक्कमण करके काजा ले और जांचकर योग्य स्थान पर परठ कर देववंदन करें।

(१६) उसके बाद जिन्हे चौविहार उपवास न हो वे पच्चक्खाण पार लें।

Scanned with CamScanner

पच्चक्खाण पारने की विधि

खमासमणा देकर, इरियावहियं पडिक्कमणे से लेकर लोगस्स तक कहें। खमासमणा देकर, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करूं? इच्छं, कहकर जगचिंतामणि का चैत्यवंदन – जयवीयराय सम्पूर्ण कहने तक – विधि करें। (स्तवन उवसग्गहरं का कहें।) फिर खमासमणा – इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करूं? इच्छं, कहकर एक नवकार गिनकर, मन्नह जिणाणं की सज्झाय कहने के बाद खमासमणा – इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! मुँहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं, कहकर मुँहपत्ति की पडिलेहना करें।

इसके बाद इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पचक्खाण पारूं? यथाशक्ति, कहें पुन: खमासमणा देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पचक्खाण पार्युं? तहत्ति, कहकर दाहिने हाथ की मुट्ठी बांध कर चरवले पर स्थापित करके, एक नवकार गिनकर जो पचक्खाण किया हो, उसका नाम लेकर नीचे लिखे अनुसार पचक्खाण पारें। (पौषध में विशेष कारण के अतिरिक्त पुरिमुड्ढ से कम पचक्खाण नहीं किया जाता है।)

एकासना, नीवी, आयम्बिल वालों को इस प्रकार बोलना है

उग्गए सूरे पोरसिं, साढ़पोरसिं, सूरे उग्गए पुरिमुड्ढ मुट्ठिसहियं पचक्खाण कर्युं चोविहार, आयम्बिल/नीवी/एकासना पचक्खाण कर्युं तिविहार, पचक्खाण फासिअं, पालिअं, सोहियं, तीरिअं, किट्टिअं, आराहिअं, जं च न आराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं। इसके बाद एक नवकार गिनें।

तिविहार उपवास वालों को इस प्रकार बोलना है

सूरे उग्गए उपवास कर्यो तिविहार, पोरसिं, साढ़पोरसिं, पुरिमुड्ढ मुट्ठिसहिअं पचक्खाण कर्युं पाणहार, पचक्खाण फासिअं,पालिअं, सोहियं, तीरिअं, किट्टिअं, आराहिअं, जं च न आराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं। इसके बाद एक नवकार गिनें।

मुट्ठसि पच्चक्खाण पारने की विधि –

मुट्ठिसहियं पच्चक्खाण कर्युं चोविहार, पच्चक्खाण फासिअं पालिअं साहिअं तीरीअं किट्टिअं आरहिअं, जं च न आराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं। इसके बाद एक नवकार गिनें।

(१७) पानी पीना हो उन्हें याचा हुआ अचित जल आसन पर बैठकर पीना चाहिए। पीने के लिए उपयोग किया गया पात्र पोंछकर रखें। पानी वाले पात्र को खुला नहीं रखना चाहिए।

Scanned with CamScanner

आहार विधि

(१८) एकासना–आयम्बिल–नीवी आदि करने के लिए आसन और अशुद्ध धोती साथ लेकर इर्यासमिति के उपयोग पूर्वक आहार करने के स्थान पर जाना चाहिए। वहाँ प्रवेश करते समय 'जयणामंगल' कहे, 'पधारों' कहा जाये तब प्रवेश करें। इरियावहियं पडिक्कमण कर काजा लें, फिर अशुद्ध वस्त्र पहनकर, थाली–कटोरी–गिलास–पाटा आदि पूंज प्रमार्जन करके ही आहार ग्रहण करने बैठें। 'वापरो' कहने पर मौन रहकर आहार करना है, ली गई वस्तु में से कुछ भी वापस नहीं किया जा सकता, जूठा नहीं छोड़ा जा सकता, लेकिन थाली धोकर पीने के बाद उसे पोछ दें। अंत में तिविहार का पच्चक्खाण करके वापस उपाश्रय में आ जावें।

(१९) उपाश्रय आकर शुद्ध वस्त्र पहनकर, इरियावहियं पडिक्कमण कर , गमणागमणे की आलोयणा करके, जगचिंतामणी से जयवीयराय तक का चैत्यवंदन करें, तत्पश्चात् रूमाल धोकर सुखा दें।

अब स्वाध्याय–जाप–वांचन आदि करें, किन्तु प्रमाद का सेवन न करें और नहीं व्यर्थ की बातें करे।

मात्रा-ठल्ले जाने की विधि

(२०) अशुद्ध वस्त्र पहन कर, पूंजनी से कुंडी को पूंज कर उसमें मात्रा करें, करने के पश्चात् परठने के स्थान पर पहले कुंडी को नीचे रखकर, निर्जीव स्थान देखकर 'अणुजाणह जस्सुगहो' कहकर मात्रा परठें। परठने के बाद पुनः कुंडी नीचे रखकर तीन बार 'वोसिरई' कहकर कुंडी को पोंछकर मूल स्थान पर रखकर न्यूनतम अचित पानी का प्रयोग करते हुए हाथ धोएँ। शुद्ध वस्त्र धारण कर इरियावहियं पडिक्कमणे तथा गमणागमणे का पाठ कहें।

ठल्ले जाना हो तो अशुद्ध वस्त्र पहनकर, बाईं बगल में चरवला रखकर, मुँहपत्ती कमर के कपड़े में खोस कर, पानी का लोटा आदि लेकर जाना चाहिए। निर्जीव स्थान देखकर 'अणुजाणह जस्सुगहो' कहकर बाधा टाले, उठते समय तीन बार 'वोसिरई' कहकर उपाश्रय आकर, शुद्ध वस्त्र पहनकर, इरियावहियं पडिक्कमे तथा गमणागमणे सूत्र बोलें; पानी का उपयोग कम से कम करें।

नोट : (१) उपाश्रय से बाहर जाते 'आवस्सहि' और वापस प्रवेश करते समय 'निसीहि' तीन तीन बार अवश्य कहें।

Scanned with CamScanner

(२) कामली के काल में कामली पूरी खोलकर, ओढ़कर उपाश्रय से बाहर जावें, लेकिन आसन कभी भी न ओढ़ें। लौटने के पश्चात् कामली को खूंटी पर टांगें, तत्काल न समेटे, कुछ समय बाद समेटे;

(३) सायं काल में गुरू भगवंत ने स्थापनाचार्य जी पडिलेहन किया हो, उसके समक्ष पडिलेहन किया जाता है, परन्तु पडिलेहन करने के पहले उबाले हुए पानी में चूना डालना चाहिए। विशेष कारण से पडिलेहन में मुट्ठिसि पच्चक्खाण लेकर, बाद में पानी पीना हो तो, मुट्ठसि पच्चक्खाण पारकर, पानी पीने के पश्चात्, देववंदन करने के पूर्व पानी में चूना डाल देना चाहिए। चातुर्मास में पानी का दो काल होता है, अतः पानी का काल पूर्ण होने के पहले ही चूना डालना न भूलें।

सायंकाल के पडिलेहन की विधि

(२१) खमासमणा देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बहुपडिपुन्ना पोरिसीं? इच्छं, कह पुनः खमासमणा देकर इरियावहियं पडिक्कमणे। इसके बाद खमासमणा देकर, गमणागमणे आलोऊं ! इच्छं, कहकर गमणागमणे की आलोयणा करें। अब खमासमणा देकर, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पडिलेहन करूं?, इच्छं, खमासमणा देकर, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पौषधशाला प्रमार्जुं? इच्छं, कहकर उपवास वाले तीन वस्त्र (मुँहपत्ति, चरवला और आसन) की पडिलेहन करें और एकासना आदि करने वाले धोती व कंदोरा सहित पाँच उपकरण की पडिलेहन करने के बाद इरियावहियं पडिक्कमे।

अब खमासमणा देकर, 'इच्छाकारी भगवन्! पसाय करी पडिलेहना पडिलेहावोजी', कहकर वरिष्ठ का एक वस्त्र पडिलेहें। फिर खमासमणा देकर, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! उपधि मुँहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं, कहकर मुँहपत्ति ५० बोल से पडिलेहन करके, खमासमणा देकर, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय करूं? इच्छं, कह नवकार गिनकर, मन्न्ह जिणाणं की सज्झाय उकडूं बैठकर कहें। इसके बाद, यदि आहार लिया हो तो वांदणा देकर, और उपवास वाले मात्र खमासमणा देकर, इच्छकारी भगवन्! पसाय करी पच्चक्खाण का आदेश देशो जी, कहकर पच्चक्खाण लेवें।

बाद में खमासमणा देकर, इच्छा० उपधि संदिसाहुं? इच्छं, खमासमणा देकर, इच्छा० उपधि पडिलेहुं? इच्छं, कहकर शेष रहे वस्त्रों की पडिलेहन

Scanned with CamScanner

करे। इसमें रात्रि पौषध करने वाले सबसे पहले कामली की पडिलेहन करे। पडिलेहन हो जाने के बाद, सभी उपधि (वस्त्रादि) लेकर खडे रहें, और एक पौषार्थी दंडासन को पडिलेहे। इरियावहियं करके, काजा ले, विधियुक्त परठे, इसके बाद इरियावहियं करके सभी देववंदन करें।

(२२) इसके बाद, अवसर के अनुसार, पाक्षिक या देवसिक प्रतिक्रमण करें। इसमें सात लाख तथा अठारह पापस्थानक के बदले, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! गमणागमणे आलोऊं? इच्छं, कहकर गमणागमणे सूत्र कहना होता है। करेमि भंते में 'जाव नियमं' के स्थान पर सदा जाव 'पोसहं' कहना होता है।

(२३) पौषध पारने के पूर्व, पहले की उपधि तथा मांगे गए दंडासन, कुंडी, पानी आदि गृहस्थ को वापस कर देना चाहिए।

(२४) प्रतिक्रमण करने के बाद सामायिक पारने के स्थान पर दिन के पौषधवाले पौषध पारें।

पौषध पारने की विधि

खमासमणा देकर, इरियावहियं पडिक्कमे, (सायंकाल पौषध पार रहे हों तो खमासमणा देकर, चउक्कसाय से जयवीयराय तक कहकर) खमासमणा देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! मुँहपत्ति पडिलेहुँ? इच्छं, कहकर मुँहपत्ति की पडिलेहना करें। इसके बाद, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पोसह पारूं? यथाशक्ति, खमासमणा देकर, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पोसह पार्यो, तहत्ति कहकर चरवले के ऊपर दाहिना हाथ स्थापित करके नवकार गिनकर पौषध पारने का सूत्र– सागरचंदो कहे–

पौषध पारने का सूत्र

सागरचंदो कामो, चंदवडिंसो सुदंसणो धन्नो;
जेसिं पोसह पडिमा, अखंडिआ जीविअंते वि **१.**

धन्ना सलाहणिज्ञा, सुलसा आणंद कामदेवा य;
जास पसंसई भयवं, दृढव्वयत्तं महावीरो **२.**

पोषध विधि ए लिधो, विधि ए पार्यो, विधि करतां जे कोइ अविधि हुओ होय ते सवि हुं मन वचन काया ए करी मिच्छा मि दुक्कड़ं।

पोसहना अढार दोषों मांहे जे कोई दोष लाग्यो होय, ते सवि हुं मन वचन काया ए करी मिच्छा मि दुक्कड़ं।

Scanned with CamScanner

इसके बाद, खमासमणा देकर, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! मुँहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं कहकर, मुँहपत्ति की पडिलेहन करके खमासमणा देकर, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामयिक पारूं? यथाशक्ति, कहकर खमासमणा देकर, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक पार्यु, तहत्ति कहकर चरवले के ऊपर दाहिना हाथ स्थापित करके, नवकार गिनकर, सामाईय वय जुत्तो सूत्र कहें।

(२५) अब जिन्होंने रात का भी पौषध लिया हो, उन्हें सायं का देववंदन के पश्चात् कुंडल न लिया हो तो कुंडल तथा दण्डासन और रात्रि के लिए चूना डाले गए अचित्त पानी मांग कर रख लेवें। इसके बाद खमासमणा देकर इरियावहियं कर खमासमणा देकर, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! स्थंडिल पडिलेहुं? इच्छं, कहकर चौबीस मांडला करें;

ये मांडला रात्रि में बड़ी नीति, लधु नीति आदि परठने योग्य स्थान देखकर प्रतिलेखन के निमित्त करने होते हैं।

मांडला

१. आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे।
२. आघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे।
३. आघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे।
४. आघाडे मज्झे पासवणे अणहियासे।
५. आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे।
६. आघाडे दूरे पासवणे अणहियासे।

इसके बाद दूसरे छः मांडलों मे **अणहियासे** स्थान पर **अहियासे** कहें। शेष बारह मांडला भी उपरोक्तानुसार ही कहना है, लेकिन **आघाडे** के स्थान पर **अणाघाडे** कहना है। (आघाडे = आगाढ़, अणाघाडे = अणागाढ़, आसन्ने = नजदीक, मज्झे = मध्य में, दूरे = दूर, उच्चार = ठल्ले, पासवणे = मात्रा, अणहियासे = असहनीय, अहियासे = सहनीय)

(२६) इस प्रकार २४ मांडला करने के बाद इरियावहियं पडिक्कमण कर प्रतिक्रमण करें।

(२७) जिन्होंने सुबह चार प्रहर का पौषध उच्चरा हो, उनकी आठ प्रहर के पौषध करने की भावना हो तो उन्हें सायं काल के पडिलेहन करते समय, खमासमणा देकर, इरियावहियं पडिक्कमणा से लेकर बहुवेल करशुं? इस आदेश तक की प्रातः काल के पौषध लेने की जो विधि बताई गई है, उसके अनुसार सारी विधि करें। बादमें सबके साथ पडिलेहन की विधि करके,

Scanned with CamScanner

देववंदन करके, देरासरे चैत्यवंदन करके, मांडला करके प्रतिक्रमण करें।

रात्रि पौषध लेने की विधि

(२८) जिन्हें मात्र रात्रि के चार प्रहर का ही पौषध करना हो, उन्हें पडिलेहन देववंदन आदि विधि सूर्यास्त पूर्व करनी होती है, इसलिए उन्हें कुछ समय पूर्व आना चाहिए, तथा वो दिन कम से कम एकासना का तप किया होना चाहिये, उनके करने की विधि–

खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बहुपडिपुन्ना पोरिसी? इच्छं, कहकर, खमासमणा देकर, इरियावहियं पडिक्कमण से लेकर बहुवेल करशुं? तक की विधि प्रात: काल के पौषध लेने की विधि के अनुसार ही करनी होती है, उसके बाद सायं काल का पडिलेहन करें, फिर देववंदन, देरासर चैत्यवंदन करके, मांडला करके, प्रतिक्रमण करना होता है।

संथारा पोरिसी की विधि

(२९) रात्रि पौषधवाले देवसि प्रतिक्रमण के बाद एक प्रहर तक स्वाध्याय ध्यान करें। फिर खमासमणा देकर, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बहुपडिपुन्ना पोरिसि ? 'तहत्ति', खमासमण देकर, इरियावहिया करके, खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बहुपडिपुन्ना पोरिसी राईय संथारए ठाईशुं, इच्छं, कहकर, चउक्कसाय का चैत्यवंदन जयवीयराय तक करें, फिर खमासमणा देकर, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! संथारा पोरिसी विधि भणवा मुँहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं, कहकर मुँहपत्ति का पडिलेहन ,करने के बाद **निसीहि निसीहि निसीहि, नमो खमासमणाणं गोयमाईणं, महामुणीणं** इतना पाठ, नवकार और करेमि भंते, ये सभी तीन बार कहें। इसके पश्चात् संथारा पोरसी का पाठ कहे–

संथारा पोरिसी

अणुजाणह जिट्ठिज्जा
अणुजाणह परमगुरू, गुरूगुणरयणेहिं मंडियसरीरा
बहुपडिपुण्णा पोरिसी, राईय संथारए ठामि ॥१॥

अणुजाणह संथारं, बाहुवहाणेण वामपासेणं;
कुक्कुडि पाय पसारण, अतरंत पमज्जए भूमिं ॥२॥

Scanned with CamScanner

संकोईअ संडासा, उव्वट्टंते अ कायपडिलेहा;
दव्वाई – उवओगं, उसास निरूंभणा लोए ॥३॥

जई में हुज्ज पमाओ, ईमस्स देहस्सिमाई रयणीए
आहार–मुवहि– देहं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥४॥

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं
साहू मंगलं, केवलिपन्नतो धम्मो मंगलं ॥५॥

चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा,
सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा,
केवलिपन्नतो धम्मो लोगुत्तमो ॥६॥

चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि
सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि,
केवलि पन्नतं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥७॥

पाणाईवाय मलिअं, चोरिक्कं मेहुणं दविणमुच्छं;
कोहं माणं मायं, लोहं पिज्जं तहा दोसं ॥८॥

कलहं अब्भक्खाणं, पेसुन्नं रईअरई–समाउत्तं
परपरिवायं माया–मोसं मिच्छत्त सल्लं च ॥९॥
वोसिरिसु ईमाईं , मुक्ख मग्ग संसग्ग विग्घभूयाईं;
दुग्गई–निबंधणाईं, अट्ठारस पावठाणाईं ॥१०॥

एगोहं नत्थि मे कोई, नाह मन्नस्स कस्सई;
एवं अदीणमणसो, अप्पाणमणुसासई ॥११॥

एगो मे सासओ अप्पा, नाण दंसणसंजुओ;
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥१२॥

संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा;
तम्हा संजोग संबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥१३॥

अरिहंतो महदेवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरूणो
जिण पन्नत्तं तत्तं, ईअ सम्मतं मए गहिअं ॥१४॥

(ये चौदहवीं गाथा तीन बार कहनी है। फिर सात नवकार गिनकर नीचे की तीन गाथा कहनी चाहिए।)

Scanned with CamScanner

खमिअ खमाविअ मई खमह, सव्वह जीवनिकाय
सिद्धह साख आलोयणह, मुज्झह वईर न भाव ॥१५॥

सव्वे जीवा कम्मवस, चउदह राज भमंत;
ते मे सव्व खमाविया, मुज्झ वि तेह खमंत ॥१६॥

जं जं मणेण बद्धं, जं जं वाएण भासिअं पावं
जं जं काएण कयं, मिच्छा मि दुक्कड़ं तस्स ॥१७॥

(३०) इस प्रकार संथारा पोरसी पढ़ने के पश्चात् स्वाध्याय–ध्यान करें, और जब निद्रा पीड़ा हो तब मात्रा आदि की बाधा टालकर, दिन में देखे गए स्थान पर इस प्रकार संथारा करें–

पहले जमीन की पड़िलेहन करने के बाद संथारा बिछाए, उसके ऊपर उत्तर पट्टा बिछाए, आसन, चरवला दाहिने पक्ष में रखें और अशुद्ध वस्त्र पहन कर बायीं करवट हाथ का तकिया बनाकर सोएं। रात में चलना पड़े तो दण्डासन से पूँजते पूँजते चलें;

रात शेष रहने पर, जागकर नवकार स्मरण, भावना भा कर, मात्रा की बाधा टालकर आएं; फिर इरियावहियं पडिक्कमण कर, कुसुमिण दुसुमिण का कायोत्सर्ग करके राइय प्रतिक्रमण करें।

फिर पूर्वोक्त विधि पूर्वक पडिलेहण करके देववंदन करे और सज्झाय करें। इसके बाद दण्डासन, कुंडी, पानी, कुंडल, कामळी आदि वस्तु वापस गृहस्थ को भलावें।

इसके बाद इरियावहियं पडिक्कमके, खमासमणा देकर, ईच्छाकारेण संदिसह भगवन्! मुँहपत्ति पडिलेहुं? इसके बाद से पोसह पारने की विधि में लिखें अनुसार सामाईय वय जुत्तो कहने तक की विधि करके पोसह पारें; (लेकिन चउक्कसाय से जयवीयराय तक न कहे।)

ज्ञानदीपक प्रश्नोत्तरी - वर्ग ६

प्रश्न ८१ : पौषध में कितने दोष लगते हैं? कौन कौन से?

उत्तर : पौषध में नीचे लिखे अठारह दोष लगते है

१. पौषध में पौषध न लेने वाले श्रावकों द्वारा लाया गया आहार पानी का उपयोग करना।

Scanned with CamScanner